बजन्ता-बुझन्ता

बजन्ता-बुझन्ता

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

BAJANTA-BHUJHANTA (बजन्ता-बुझन्ता)
Collection of Seed Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-20-9
दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल

फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

समरपित

•••

••

•

कथाक सत्तैर-

कचोट

आजादीक चौंसैठम वर्षगाँठ मनबैले, खुशीक समुद्रमे बाल-वृद्ध डुमल। चौदह अगस्तक निसभेर राइत। अचानक पत्नीक छातीमे टनक उठलैन। दू बजैत। बारहे बजे रातिसँ जहाँ-तहाँ रबाइस-फटाका फुटैत। अधिक धिया-पुता भेने बेसीकाल घरवाली खन-खनाएले रहै छैथ। अपनो अभ्यस्त भऽ गेल छी। जइसँ ने डॉक्टरक ऐठाम जाइमे अबूह लगैए आ ने लसुनतेला बना मालिश करैमे। घरक अनिवार्य खर्चमे दबाइयो-दारू आबि गेल अछि, तँए करवनो मनमे चिन्तो-फिकिर नहियेँ जकाँ रहैए।

एक तँ सौन-भादवक अन्हार, तैपर मेघडम्बर जकाँ मेघौन। एत्ती रातिमे की करब। ने गाममे डॉक्टर छैथ जे लालटेनो हाथे बजा अनबैन, थाल-किचारक रस्ता, चारि किलोमीटरपर डॉक्टरक घर।

जहिना कोनो फनिगा मकड़जालमे फँसि छटपटाइत तहिना मन छटपटाए लगल। मोन पड़ल दुनू परानीक जिनगी। समाजमे अपना सन केते जोड़ा अछि जे दोहरा कऽ सिनूर भरने हएत। जीता-जिनगी बिसवासघाती नै बनब। जे बनि पड़त तइमे पाछू नै हटब। उत्साह जगल।

घरक जेते टंगर रही, सेवामे जुटि गेलौं। कियो तेलक मालिश, तँ कियो सुखले ऐंठुआ ससार करए लगलैन। अपने रिक्शा भँजियाबए विदा भेलौं। मझिली बेटी माइक आँगुर फोड़ि-फोड़ि रोग जाँचए लगल। जहिना

थर्मामीटर लगा डॉक्टर बोखारक जाँच करैत तहिना ने मलकारो मालक पाउज गनि रोगक जाँच करैए।

तीन बजे भोरमे रिक्शा नेने पहुँचलौं। माएकेँ उठा बेटा-बेटी रिक्शापर चढ़ौलकैन। जेठका बेटाकेँ संग केने डॉक्टर ऐठाम विदा होइत तेसर बेटाकेँ कहलिऐ-

"बौआ दिनेश, माल-जालक तकतान करब।"

गामेक मिड्ल स्कूलक पाँचमा क्लासमे पढ़ैत दिनेश, फस्ट करैए। शिक्षककेँ जहिना गुरुक आदर करैए तहिना अपनो दुनू बेकती-ले श्रवणे-कुमार छी।

साढ़े एगारह बजे घुमि कऽ एलौं। एक तँ रौद, तैपर कठगुमारी। पिआसे मन तबधल रहए। दरबज्जापर रिक्शा देखिते दिनेश लोटामे पानि नेने पहुँचल। लोटाक पानि देखि हृदए उमैड़ गेल। अनासुरती मुहसँ निकलल-

"बौआ, इसकूल..?"

अखन धरि दिनेश बिसैर गेल छल- पनरह अगस्त, स्वतंत्रता दिवस। बिसैर गेल छल झण्डाक संग मिलि चलब, बिसैर गेल छल नव बर्खक उपहार...।

दिनेश बाजल- "नहि, केना जेतौं।"

मनमे असहनीय कचोट भेल। मुदा बात बहलबैत बजलौं-

"बौआ, एहेन फेड़ा जिनगीमे कहियो ने लागल छल। मुदा सभ शुभ-शुभ सम्पन्न भेल।"

❑

शब्द संख्या: 315

काँच सूत

साठि बर्खक संगी पैंसैठम बर्खमे रहने तँ मोहनकेँ किछु नै बुझि पड़लैन मुदा सोहनकेँ मन कहलकैन जे भरिसक दुनू गोरेक बीचक सम्बन्ध काँच सूतमे बन्हल छल।

मोहनो आ सोहनोक-घर बीघा दुइयेक हटल। ओना, दुनू दू जातिक मुदा दू जातिक बीच जेते दूरी बनल अछि तेते नै छैन। कारण जे एकठाम रहने बहुत बेमारी लगियो जाइ छै आ छुटियो जाइ छइ। तहिना दुनू गोरेक बीच रहने छैन। दुनू लंगोटिया संगी। ओना, किछुए मासक कमी-बेसी दुनूक बीच छैन, मुदा पाँच बर्ख धरि तँ बच्चाकेँ घरे-अँगना चिन्हेमे लगि जाइ छइ। गामक कतिका माने जाड़क मासक अखड़ाहासँ लऽ कऽ कबड्डी, गुड़ी-गुड़ीक मैदान होइत विद्यालय धरिक संगी दुनू गोरे। ओना, गामक विद्यालयक पछाइत दुनू गोरे दू विद्यालयमे पढ़लैन, मुदा ग्रेजुएशन एके साल दुनू केलैन। साइंसक विद्यार्थी रहने मोहन कौलेजमे डिमॉस्टेटर बनला आ सोहन एम.ए.मे नाओं लिखौलैन। पछाइत एम.एस-सी. केलोपरान्त मोहन लेक्चरर बनि तीन साल पहिनहि सेवा-निवृत्ति भेला। एक तँ जिनगी भरिक संगी, दोसर समाजक पढ़ल-लिखल तँए बैसार-उसार एकठाम अधिक-काल होइत। रौदियाह समय भेने पहिल शिकार खेतसँ जुड़ल लोक हेता, तँए अखन चौक-चौराहाक मुख्य विषय रौदी बनल अछि।

छह बजे साँझ। टहैल-बुलि कऽ दुनू गोरे आबि चौकपर बैसला।

लाटमे पान-सात गोरे सेहो बैसला। धानक जरैत खेती देखि सोहन दालिक खेतीक चर्च उठबैत कहलखिन-

“अस्सीक दशकसँ पहिने दालि सस्त छल आ अखन वएह महग भऽ गेल अछि। पानि नै भेने अखन उपाइयो तँ दोसर नहियेँ अछि। सरकारी जे अछि से कागतेमे अछि।”

जेना सोहनक बात मोहनकेँ लागि गेलैन। प्रतिवाद करैत बजला-

“हमरा उमेरसँ बेसी तोरो उमेर नहियेँ हेतह, जहियासँ देखै छिऐ दालिए महग अछि।”

विचारमे लोच दैत सोहन बजला-

“अपना ऐठाम कहबी छै जे ‘नीच काज कऽ ली मुदा राहैड़क बोइन नै ली।’ कोनो कहबी ओहिना नै होइ छइ।”

जेना केते घैल घी मोहनक सोहन हरा देने होनि तहिना आगि-बबूला भऽ उठि विदा होइत बजला- “केकरो कहने किछु भऽ जाइ छइ।”

सोहन गुम्मे रहला। किछु-कालक पछाइत मनमे उठलैन की फूसि बाजल छेलौं? तखन लगलैन किए? नजैर पाछू दिस बढ़लैन। जहिना पहियाकऽ गाड़ीक पहिया चलैए तहिना पहियाकऽ देखलापर देखलैन जे जे जिनगी छलांगसँ उठै छै ओ ओहिना निच्चो होइ छै, मुदा धड़ियाकऽ जे जिनगी उठै छै ओ धड़ियाइते रहै छै, चाहे जेमहर जाउ। आइ बुझै छी जे दुनू गोरे काँच सूतमे बन्हल छेलौं जे अबैत-अबैत आइ टुटि गेल। संगी रहने लोक हराइए, भँसियाइए। मुदा, असगर चलनिहार केतए हराएत। पत्ता पकैड़ बिच्चो पकड़ैक लूरि चाही।

❑

शब्द संख्या: 384

बुधनी दादी

जहिना कुम्हारकेँ भादवक रौद वादलमे झँपा गेने दुर्दिन आगूमे नाचए लगैत तहिना बुधनी दादीकेँ साल भरिसँ भऽ रहल छैन। साल भरि पहिने तक–जाबे पति जीबै छेलैन–दिल्लीक कमाइसँ जे सुख केलैन, रहितो आब नइ भऽ पाबि रहल छैन। सोलह कोठरीक हथिसार जकाँ मकानमे असकरे रहैत डर होइ छैन जे कहीं सुतली-रातिमे भुमकम भेल आ घर खसल तँ महिनो दिनमे ऊपर हएब कि नहि। तरेमे सड़ि कऽ महैक जाएब।

जहिया बुधनी दादी नैहरसँ सासुर एली तहिए-सँ कहूँ आकि नैहरोमे तइसँ पहिनेसँ कहूँ.., नहेला पछाइत हनुमान चलीसा पढ़िते छैथ। सेहो किताब देखि कऽ नहि, मुँहजुआनियेँ। गामक तीन टोलमे आबा-जाही बुधनी दादीक छैन। कोन-पाबैन कहिया हएत आ कोन उपास कहिया पड़त से हिसाब जोड़ए अबै छैन। तैसंग ईहो छैन जे सामाक गीत टोलक कोन बात जे गामेमे सभसँ बेसी अबै छैन।

छठिक भिनसुरका अर्घ पड़ि गेल, आइसँ सामाक गीत हएत। दसमा वर्गक राधा बुधनी दादी लग पहुँचल। पहुँचते राधा बुधनी दादीकेँ गोड़ लागि कहलकैन-

“दादी, अपन मोबाइल नम्मर दऽ दिअ। जखन अबैक छुट्टी हएत एबो करब नइ तँ मोबाइलेपर गीत लिखि लेब।”

मोबाइलक नाओं सुनिते बुधनी दादीक मन गाछसँ खसल कटहर

जकाँ आँठी उड़ि केतौ, कमरी उड़ि केतौ आ नेरहा उड़ि केतौ, छँहोछित भऽ गेलैन। बजली-

"बुच्ची, आब तोरा सबहक जुग-जमाना एलह। बेटा मोबाइल पठा देलक जइसँ कहियो-काल धियो-पुतो आ बेटो-पुतोहुसँ गप-सप्प होइ छेलए, सेहो केदैन चोरा लेलक। भरि दिन अँगनेमे बैसल रहब से पार लगत। मूस तेते भऽ गेल अछि जे ने नुआ-बसतरक सेखी रहए दइए आ ने खाइ-पीऐक।"

राधा-

"दादी, अहिना जिनगी चलै छइ।"

बुधनी दादी-

"बुच्ची, जीबैक मन होइए मुदा तेहेन-तेहेन आपैत-विपैत सभ अछि जे होइए तइसँ नीक भरमे-सरमे मरि जाइ।"

❑

शब्द संख्या: 267

खिलतोड़

आकाशवाणी केन्द्रक कार्यक्रमक कृषि विभागसँ दयाकान्त तीस बर्खक पछाइत सेवा-निवृत्ति भेला। खेती-पथारीक कार्यक्रमक चिन्हार चेहरा बनौने रहला। नोकरी पाबि जिनगीमे बहुत किछु केलैन। तीनू बेटो आ दुनू बेटियोकेँ पढ़ा-लिखा, नोकरी धरा नेने छैथ। अपनो रहैक बेवस्था शहरेमे कऽ लेलैन। सेवा-निवृत्तिक चारि बर्खक पछाइत मन उबियेलैन जे शहरमे नइ रहब, बाप-दादाक बनौल गाममे रहब। मन उबियाइक कारण भेलैन जे पुरना संगी सभमे किछु गोरे आन-आन शहर, तँ किछु गोरे गाम आ किछु गोरे मरियो गेला। पछाइत जे संगी भेटलैन, हुनका सभसँ तेहेन सम्बन्ध नै बनि सकलैन जेहेन पहिलुका सबहक संग छेलैन। दूर रहने परिवारोक (बेटा-बेटीक) सम्बन्ध पतरा गेल रहैन। पत्नियो संगी नइ बनि सभ दिन भनसीए रहि गेली।

खण्डहर जकाँ घर-घराड़ी दयानन्दक। गाम अबिते पहिने घर-अँगना, बीस बर्खसँ परता पड़ल चापाकल उड़ाहलैन। दरबज्जापर अबैत-अबैत मास दिन लगि गेलैन। दरबज्जापर अबिते देखलैन जे ऐगला बाड़ी परती पड़ल अछि। जँ एकरा चौमास बना लेब तँ सालो भरि परिवारक तीमन-तरकारी तँ चलबे करत जे किछु बाँटियो-खोंटि लेब।

सहए केलैन। कहिया केतए-सँ परता पड़ल खेतकेँ गहींरसँ ताम करबा दयाकान्त चौमास बनौलैन। अरवन धरि जे अल्लूक खेतीक सम्बन्धमे बुझै छला तही हिसाबसँ खेत तैयारो केलैन आ खाद-

कीटनाशक दऽ रोपबो केलैन।

रोपलाक बीस दिनक पछाइत खेतमे चारिअना गाछ देखलैन। मुदा घबड़ेला नहि, सबुर केलैन जे अखन जनमैयोक समय छइहे। तीस दिनक पछाइत जखन ओहो चौअन्नी गाछमे अदहा-सँ-बेसी जरिये गेलैन तखन माथ ठमकलैन। मुदा पुछबो किनकासँ कएल जाए। तहूमे जिनगी भरि अपने दोसरकेँ बुझेलौं। .. ओना, ओझरी मनमे लगए लगलैन मुदा चेत गेला। जे खेतीक मर्म बुझैत होथि तिनकासँ बुझब नीके छी। 'बुझब', 'गहराइसँ बुझब' आ 'मर्म बुझब' भिन्न-भिन्न होइत अछि।

ठेहियाएल दयाकान्त दीनानाथ लग पहुँचला। दयाकान्तकेँ देखिते दीनानाथ कहलकैन-

"आऊ-आऊ, लाल भाय।"

रेडियो स्टेशनमे 'लाल भाइक' नाओंसँ दयाकान्त छला तँए 'लाले भाइक' नाओंसँ जनै छैन।

चाह पीब दयाकान्त बजला-

"दीना भाय, अल्लू रोपलौं से गाछे ने भेल!"

जहिना सौरखीक पात देखि डाँट पकैड़ सौरखी उखाड़ल जाइत तहिना दीनानाथ दयाकान्तक बातकेँ जड़ियबैत पुछलखिन-

"अल्लू खुनि कऽ देखलिऐ जे सड़ि गेल आकि जीविते अछि?"

"हँ, सभ सड़ि गेल।"

"खेतमे हाल केहेन अछि?"

"से तँ बढ़ियाँ अछि। ओते नै अछि जे अल्लू सड़ि जाएत।"

"तखन?"

"सएह नइ बुझै छी।"

"बीआ काटि कऽ रोपने छेलौं आकि सौंसे?"

“गोटगरहा सौंस रोपने छेलौं। तैसंग खादो आ कीटनाशको भरपूर देने छेलिऐ।”

खादक मात्रा सुनि दीनानाथ कहलकैन-

“देखियौ, कहिया केतए-सँ जमीन परता छल, खिलतोड़ भेल। ओकरा अपनेमे ओते शक्ति छै जे सुभर उपजा दऽ सकैए। तइमे तेते खाद दऽ देलिऐ जे बीए जरि गेल।”

❑

शब्द संख्या: 395

मुँह-कान

कालि्हए बैंकक मैनेजर आबि सुनरलालक गाएकेँ देखि गेल छला। एक्कैस हजारक गाए। गामक किसानक बीच एकछाहा चर्च। कियो सिलेब रंगक चर्च करैत तँ कियो सिंह-सिंगहौटीक। कियो थुथुनक चर्च करैत तँ कियो गरदैनक ऐगलाक।

जैठाम मनुक्खोकेँ उचित अन्न नै भेट रहल अछि तैठाम मवेशी पालन धिया-पुताक खेल छिऐ। केते दूधक जरूरत अछि, तइले केते मवेशीक जरूरत पड़त मूल प्रश्न भेल।

एक तँ एक्कैस हजारक गाए गाममे आएल अछि, अखन धरि जे नै आएल छल। दोसर, बैंकक लाभो जरूर भेल। ..मनधनो काका गाए देखए सुनरलालक ऐठाम एला।

गाइक रंग-रूप देखि मनधन काका चैन होइत तमाकुल खाइले बैसला। खुशीसँ खुशियाएल सुनरलाल बाजल-

“काका, बहू-दिनसँ हीक गड़ल छल जे एकटा नीक गाए खुँटापर बान्हब, से भगवान पूर केलैन।”

भवधारमे बहैत सुनरलालकेँ देखि मनधन काका बजला-

“बड़ सुनर गाए छह। मलकार की सभ कहलकह?”

काजक जड़ि दिस बढ़ैत सुनरलाल बाजल-

“चारि मासक पछाइत एक-संझू भऽ जाएत आ छह मास

लागत।”

“केते दूध होइ छह?”

“दू किलो भिनसर आ डेढ़ किलो साँझमे।”

दूधक नाओं सुनि मनधन काका चौंकला, बाप रे केतए-सँ बैंकक कर्ज चुकौत, केतए-सँ गाइक खरच जुटौत आ केतए-सँ अपने गुजर करत। बातकेँ आगू नै बढ़ा मनधन काका सुनरलालकेँ चरियबैत कहलखिन-

“छब-दे तमाकुल खुआबह। एकटा काज मोन पड़ि गेल।”

“एना अगुताइ किए छी, काका?”

मुदा मनधन काकाकेँ कोनो जवाब नै फुरलैन। मनमे नचैत रहैन युग तँ आर्थिक मोड़ लऽ रहल अछि। मुदा घिड़नीक चालि केमहर छै वस्तुक गुण दिस आकि सुआद दिस?

❑

शब्द संख्या: 231

अनदिना

शिक्षक अमरनाथकेँ देखिते रामकिसुन पुछलकैन- “मास्सैब, अनदिना गाममे देखै छी?”

रामकिसुनक प्रश्नसँ अमरनाथ अचम्भित भऽ गेला जे एहेन बात किए पुछलैन! मुदा बाजबो तँ उचित नहियेँ हएत। रंग-बिरंगक जहिना शिक्षक छैथ तहिना विद्यार्थियो अछि। जेहने चलबैबला अछि तेहने चलौनिहारो अछि। की हमरा कहने झूठ भऽ जेतै जे शिक्षक सभ दरमहे-टा उठबए विद्यालय जाइ छैथ, आ ईहो कि झूठ भऽ जाएत जे सरकारो दहिन-गबैया जकाँ महिने-महिने दरमाहा देब छोड़ि सालक-सालेक पाहि लगबैए... ।

अमरनाथक मन ठमकलैन। ‘अनदिना गाममे देखै छी..!’, ‘अहाँ गामसँ हटि नोकरी करै छी..!’, ‘बिनु छुट्टीक दिन गाममे छी..!’, की समाजक एतबे दायित्व बनै छै जे फल्लाँ भाइक सातो बेटा गुरुजी बनि गेलखिन..?

..अधभर मुस्की दैत अमरनाथ बजला-

“भाय, की कही, जुगेमे भूर भऽ गेल। अमैया छुट्टीमे गाम एलौं हेन आ ऐठाम देखै छी जे फैजली सभ कोशेबो ने कएल हेन।”

दिन ठेकनबैत रामकिसुन पुछलकैन-

“केते दिनक छुट्टी अछि जे एना हदिया गेलौं?”

“आब कि ओ जुग-जमाना रहल जे रोहनिया-सँ-फैजली तक खाइक छुट्टी होइ छइ। अदहासँ बेसी छुट्टी कटियो गेल अछि। जब हमर स्कूल खुजत तेकर पछाइत आन-आन स्कूलमे छुट्टी हेतइ!”

रामकिसुन- “ई तँ अजगुते भेल!”

दहिना हाथसँ चानि ठोकैत अमरनाथ बजला-

“अहाँ अजगुत कहै छिऐ। एतबे अछि। पहिने सरकारियो ऑफिसमे आ आनो-आनो ठाम किरानी होइ छेलै, अखनो अछि। तहिना स्कूलमे शिक्षक होइ छला, अखनो छैथ। मुदा आबक शिक्षक सालो भरिक नहि, छह-मसुआ बनि गेला। छह मास धिया-पुताकेँ पढ़ाउ आ छह मास ऑफिसक काज करू। जहिना नाचमे लेबरा सभ नै लेबराइ करैए तहिना ने हमहूँ सभ कखनो माल्थस-रॉविनसन करै छी तँ कखनो घरे-घर पहुँच बकरी-छागरक गिनती करै छी।”

अमरनाथक बात सुनि रामकिसुन ओल जकाँ कबकबेला नहि बल्कि मुस्की दैत बजला-

“होउ, अहीं सबहक जुग-जमाना छी, जे काटब से काटि लिअ।”

रामकिसुनक ‘काटब’ सुनि अमरनाथ अह्लादित होइत बजला-

“ठीके ने अहाँ कहै छी। अपना सभकेँ जे सभसँ छोटका दिन अछि, ओइमे कथीक छुट्टी होइए से बुझल अछि?”

“नहि।”

“बड़ा दिनक!”

❑

शब्द संख्या: 307

अपन काज

तेजीसँ समय अगुएने, माने विकास भेने महगियोक विरधी धकधका गेल। तहूमे तीमन-तरकारीक तेजी भेने, बाड़ी-झाड़ीसँ टपि खेत-पथार दिस बढ़ल। जइ चौमासमे अन्डी-बगहन्डीसँ लऽ कऽ भाँग-धथुरक बिरदावन रहैत आएल छल ओ कटि-खोंटि चौमासो दिस घुसकुनियाँ कटलक।

अखन धरि कपलेसर, परिवार धरिक तरकारी उपजबै छल सेहो कोनचरमे सजमैनक गाछ आ गौसारपर अल्लू-कोबी, मिरचाइ-भट्टा उपजबै छल। आब ओ चारि कट्ठा कोबी-खेती करत। ओना, पाँच बीघा जोतक किसान कपलेसर अछि, मुदा खेतमे खादक हिसाब धाने-गहुमक बुझैए। मिरचाइ बाड़ीकेँ कड़चीसँ भोला बतियबैत रहैथ आकि कपलेसर अबिते पुछलकैन-

“भैया, चारि कट्ठा कोबीक खेती करब, तइमे केते खाद लगतै?”

कपलेसरक प्रश्न सुनि भोला तारतममे पड़ि गेला। रंग-बिरंगक प्रश्न मनमे उठलैन। जइ खेतमे पहिल बेर खेती हएत आ जइ खेतमे साले-साल होइ छै, उपजैक दृष्टिसँ दुनू एक केना भेल। तेतबे नहि, कोबीक पैछला फसिल कि छेलै, सिरो तँ रंग-रंगक होइ छइ। कोनो छह आँगुर ऊपरे धरिक तँ कोनो बित भरिक, कोनो तोहूसँ गहींरक। जँ खेत खसले अछि तँ केते दिनसँ खसल अछि तही हिसाबसँ ने रसेबो करत। तहूमे पृथ्वीक रस तँ आरो एकभग्गु छइ।

..भोलाक मनमे लगले उठलैन जे जखन वेचारा पूछए आएल, सेहो ओहिना नै देखबो करैए तखन किछु नै कहिऐ से केहेन हएत। किछु कहैले ठोर चटपटेलैन मुदा मनमे उठि गेलैन जे कोन खादक नाओं कहबै? ओहोमे तँ करामातीए अछि। एक्के खादमे कथूक मात्रा बेसी रहै छै तँ कथूक कम। मन अकछए लगलैन जे अनेरे अपनो काज बरदा मगजमारी कऽ रहल छी। मुदा धाँइ-दे किछु कहियो देनाइ केहेन हएत। मन घुमलैन अपन जवाब अपने उठलैन जे काज बरदाइए आकि दोसर काज ठाढ़ करैए? असथिर मन होइते पोखैरक पानिमे जहिना हवा पाबि हिलकोर उठैए तहिना भोलाक मनमे हिलकोर उठलैन। प्रकृतिक हिसाबसँ मौसम बनै-बदलैए। फसिलक अपन गति छइ। तैठाम क्षेत्र-क्षेत्रक मिलान नै हएत तँ उपजाक केते भरोस कएल जाएत? दुनियाँ घर अँगना बनि गेल अछि दूरक बात बेसी बुझै छी आ घरक बात बुझिते ने छी। गहुमेक बागुक समय इलाका-इलाकामे अलग-अलग तिथिसँ होइत अछि, तेकरा केना बुझब। अपन बात सहजे शीतगृहमे रखि देने छी, नइ तँ जयंती बाबड़ीमे थोड़े बन्हाइत।

..मन थीर होइते भोला कहलखिन-

“कपले, पढ़ल-लिखल जेहेन छी से तहूँ जनिते छह, आब तोरो उमेर कम नहियेँ भेलह। खेती करै छी, पुछलह तँ कहै छिअ। चारि किलो डी.ए.पी. तीन किलो पोटाश, कीटनाशक संग खेतमे मिला दिहक। नवका किस्मक बीआ छेबे करह सवा-हाथ-डेढ़-हाथपर रोपिहह।”

❑

शब्द संख्या: 367

दूरी

जहिना समैपर काज भेने, भोजन भेने, अराम भेने मनमे हलचल कम उठैत तहिना नइ भेने बेसी उठैए। लोहोक मशीन नियमित चलने अपन जिनगीक गारंटी करैए तहिना मनुक्खोकेँ गारंटीक सीमा भरिसक हेबे करतै।

नियमित जिनगीमे चलैत चिन्तू चाहक प्रतीक्षामे बैसल छला। ओना, चाहक संयोग नीक छेलैन जे पुतोहुक बदला पत्नी-हाथक चाह कएक दिनुका पछाइत भेटतैन मुदा मन ओझड़ाइत रहैन जे पत्नी बिनु पुछनहि तीन दिनपर चारि बजे भोरे आबि गेलखिन। मनक ओझरीक दूटा कारण छेलैन। पहिल बिनु पुछने भाए-भौजाइ ऐठाम चलि गेल रहथिन, आ जहिना गेलखिन तहिना बिनु बजौनहि चलियो एलखिन। दोसर कारण रहैन जे जखन ने हम हुनका (पत्नी) भरोसे जीबै छी आ ने ओ हमरा भरोसे, तखन जँ नहियेँ पुछलैन तँ की हेतइ..?

समयसँ बहुत पहिने तँ नहियेँ, अपने दोसरे दिस रहैथ, मुदा साएक अन्त नहि शुरूहे दिसक रहैन तँए चिन्तूक मन बेसी आगू नै बढ़ि ठमैक गेलैन। मुदा ठमकल रहलैन नहि, जेना पछुलके गप मनकेँ तेना ने हौंर-हाँरि देलकैन जे चाहक एके चुस्की लैत-लैत दोसर प्रश्न आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन। ओ ई जे पुरुष-औरत मिलि एक जिनगी ठाढ़ करैए, मुदा दुनूक बीच दूरी तँ अछिए। तखन किए कहै छै जे एक बाप-माइक दुनू परानीक बीच जे दूरी अछि ओकरो झूठलौल जा सकैए। दू इलाका, दू बोली, दू

संस्कृति जिनगीक क्रिया...।

तैबीच अपसियाँत होइत पोता- 'इन्तू' आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन। इन्तूक ड्यूटी छेलै भिनसुरका चाह बाबाकेँ पहुँचेनाइ। चाह पहुँचा पत्नी अँटकली नहि, तैबीच इन्तू आबि गेल रहए। बाबाकेँ अनुकूल बनबैत इन्तू पुछलकैन-

"बाबा हौ, मन बड़ खुशी देखै छिअ?"

लत्तीए जकाँ बातो लतड़ै छइ। सांगह लगबैत बाबा पुछलखिन-

"से तूँ केना बुझै छीही?"

इन्तू टपैक खसल-

"दादियोकेँ हँसैत जाइत देखने छेलियह।"

❑

शब्द संख्या: 265

पुरनी भौजी

बीस दिन बरिसाइत बितनौं झूर-झार आम पाकब शुरू नइ भेल अछि।

बिनु बर्खाक गरै जकाँ मेघ रूखि पकड़लक। दसो पोता-पोतीकेँ नेने पुरनी भौजी रोहनिया आमक झमटगरहा गाछ लग बैस दसोकेँ कहलखिन-

“जे पहिने पौत से मीरा, जे दोसर पौत से दोहल, जे तेसर पौत से तेहल आ जे चारिम पौत से चौहल।”

पुरनी भौजीकेँ तीनटा बेटा छैन। बिनु गहबर गेनौं पोता-पोतीक ढबाहि लगल छैन। बच्चाकेँ देखि माइक ममता तँ सोभाविक अछि। बाप तँ भरि दिन बोनाएले रहै छथिन।

दस बर्खक पोता, जे मिड्ल स्कूलमे पढ़ैए; टेंटियाह सुग्गा जकाँ टाँहि-दे पुछलक- “मीरा माने की भेल, दाइ?”

बिहाड़ि तँ बिड़हा गेल मुदा हवाक सिहकी उठल। ढेनुआर जकाँ धऽ कऽ भड़भड़ा गेल। के पहिने पौलक तेकर ठेकाने ने रहल।

❑

शब्द संख्या: 117

छुटि गेल

तृतीयाक साँझ भगवती स्थानमे दऽ सावित्री बाबा लग आबि फुदकैत बाजल- “बाबा, एकटा बात बुझलौं?”

मद भरल पोतीक बात सुनि आगू सुनैक आशामे आस काशीनाथ ओइ संगीत प्रेमी जकाँ मारलैन जे एकक पछाइत दोसरो सुनए चाहैए। मुँह बाबि पोती दिस देखए लगला। मुँह रोकि सावित्री महराइक पलगाँ जकाँ प्रतिक्षा करए लगल। ..काशीनाथक मन फुरफुरेलैन जे भरिसक चुप्पा-चुप, धुप्पा-धुप खेल ने भऽ गेल! हमरा उठलेसँ काज तँ हमरा बैसलेसँ काज...।

सावित्रीकेँ काशीनाथ पुछलखिन-

“की सुनलौं?”

“अबै छेलौं तँ अहाँ-दे लोक सभ बजै छला जे ओ आब केकरो नै गरियबै छथिन।”

गारिक नाओं सुनि सावित्रीकेँ अनुकूल बनबैत काशीनाथ बजला- “बुच्ची, केतेकेँ गरियाएब। अपने मुँह दुखा जाइए। छोड़ि देलिऐ तँए छुटि गेल।”

❑

शब्द संख्या: 111

काल्हि दिन

हमरा गामक पजरेमे पाभैर हटल कटहरबा गाम छइ। हमरा गाम जकाँ बरहवर्णा तँ नहि, मुदा तैयो दू साए घरसँ ऊपरेक छइ। तीनिए-चारि जातिक बस्ती। समांगक पातर रहने परदेश नइ जाइ छी। अधपुरान साइकिलपर मसल्लाक कारोबार करै छी। हमर मेन मारकेट कटहरबे छी, मिरचाइ, हरदी, धनिया, लहसुन इत्यादि बेचै छी। पनरह-बीस घरक पाहि लगौने छी, सभ दिन हरियरीए रहैए। बनियाँ जाति बाँकी दुनियासँ कोनो मतलब नहि।

पैछला सालक भोँट दिन की भेलै से अरवनो ने बुझै छी। एतबे देखै छी जे दुनू गामक बीच खूब मारि भेल। दुनू गामक लोक झोरा लऽ लऽ कोट-कचहरी करैए। चाहे जेकर गोटी लाल होइ तइसँ हमरा कोन मतलब। छगुन्तामे पड़ल छी जे मारि केलक कोइ, रोजी-रोटी हमर केना छीना गेल, एकठाम रहितो दुनू गामक आबा-जाही किए बन्न भऽ गेल? अपना खेत-पथार अछि जे अपने आगिए-पानियेँ निमहब! तैबीच पत्नी आबि पुछलैन- "एना सोग-पीड़ामे परिवार चलत?"

हम कहलयैन- "काल्हि दिन केना चलत सएह तँ अपनो विचारै छी!"

❑

शब्द संख्या: 151

अप्पन हारि

मनकेँ केतबो अपना दिससँ बहटारए चाहै छी मुदा तैयो कुकुर जकाँ दुआर-दरबज्जा छोड़बे ने करैए। छोड़बो केना करत? कोनो कि आइयेक संगी छी आकि जहिए पशु-पक्षी दिस तकलौं तहिए-सँ ने ओहो संग लगि परिवारमे सटि गेल।

अपन दुरागमन भेल। आने सभ जकाँ अपनो बुझि पड़ए लगल जे सौंसे दुनियाँ दुल्हीनेसँ भरल अछि। तहिना पत्नियोक आँखि हमरा छोड़ि किछु देखबे ने करैन। थोपड़ी कि कोनो एक्के हाथे बजैए। ओइले तँ दुनू हाथ चाही। से भेबो कएल। बुझि पड़ए जे सौंसे दुनियाँ फूसि आ दुइए परानी सत् छी। एहेन स्थितिमे मेल-मिलानक कथे की। कान्हीसँ विचार धरिक।

जहिना दुनू कसमकस पार्टीक बीच फैसला उचित होइत तहिना भगवान निसाफो केलैन। तइसँ फलो नीक भेटल। जौंआँ बेटा भेल। जँ दुनू दू रहैत तँ बेइमानियोँ होइतए, से एक्के रहए। खुशी तँ दुनू परानीकेँ भेल मुदा दू दिशामे। अपना मनमे हुअए जे हे भगवान दसो साल जँ एहेन उपजा देलह तँ गाममे बीस भऽ जाएब। तरे-तर माघक खेसारी जकाँ मन गदगदाएल। मुदा पाटनरक विचार दोसरे रहैन। एकहरी बच्चाक होनहारी-दर्द दोहराएल रहैन तँए पाण्डु रोग जकाँ पीड़ी पकड़ने।

चारि-पाँच मासक पछाइत फेर दुनियाँ दिस दुनू पाटनर तकलौं। मुदा विचारमे खटपट हुअ लगल। खटपट एते बढ़ि गेल जे एक-एक बेटा

बाँटि दुनू दू दिस भऽ गेलौं।

तीन बर्ख भऽ रहल अछि। पत्नीक हिस्साक बच्चा फूल सन लहलह करैए। वएह अपन दहिना हाथक चटकन दिन-राति खाइए। कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ि गेल जे औझुका थापर एहेन लागि गेलै जे मुहेँ भरे माटिपर खसल।

अपन कोखिक कनैत बच्चाकेँ देखि पत्नी गरियबैत बजली-

"पुरुख नहि, पुरुखक झड़ छी।"

सुनि क्रोध नै उठल। जेना मनक सभ ताप-सन्ताप मेटा गेल हुअए। लजाएल आँखि, आँखिपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे झपैट लेती। मुदा जहिना रौद पानिमे आ पानि रौदमे सटि नव जीवन धड़ैए तहिना आब अपनो विचारै छी।

❑

शब्द संख्या: 286

कनफुसकी

गामेक स्कूलमे सोहनक संग दोस्ती भेल। ओना, कनीए हटि कऽ एक्के गाममे दुनू गोरेक घरो अछि मुदा आने गाम जकाँ। तीस साल पूर्व जखन एक्के विद्यालयमे नोकरी भेटल तखन नजदीकी आएल। पाँच बर्खक पछाइत अबरजात, नौत-पिहानमे बदैल गेल। दू जाति रहितो छान-बान कमल।

तीस बर्खक पछाइत आइ एहेन भऽ गेल जे नजैर-सँ-नजैर मिलए नै चाहैए। सभ गुण मिलतो एकटा अवगुन सोहनमे शुरूहेसँ रहल जे अनका कानमे फुसफुसा विचारकेँ घुसका-फुसका दइत। जे ऐ बेर बुझलौं। सेहो केना बुझलौं तँ जेकरा लग बजला ओ आबि जड़ि-सँ-अन्त धरि कहलैन। मन तुरैछ गेल। संग केने जखन सोहन लग पहुँच पुछलयैन-

"भाय, की सभ भोला भायकेँ कहलयैन?"

प्रश्न सुनि जेना सोहनक बीख ओइ साँप सदृश बुझि पड़ल जे हबक मारैले खेहारैए केकरो आ काटि लइए तेसरकेँ, तहिना। ने ओ किछु बजला आ ने अपने दोहरा कऽ किछु पुछलयैन।

❑

शब्द संख्या: 132

मुँहक बात मुहेँमे

पछबारि गामबलाक एहेन दशा कहियो ने भेल रहैन जेहेन आइ बहिरा माए केलकैन..!

पछबारि गामक घटक बहिरापर अबै छला। गाम-घर आ बरक चर्च सुनि नेने छेलखिन। मन मानि गेल रहैन जे अपना-जोकर कुटुमैती नीक अछि। गामक सीमानपर अबिते एक गोरेकेँ पुछलखिन। सभ गुणक चर्च नीके बुझि पड़लैन मुदा 'बहिरा' नाओं सुनि मन भिनभिना गेलैन। मन भिनभिनाइते, बैलून जकाँ देहक शक्ति निकलए लगलैन। आमक गाछ देख, निच्चाँमे बैस सोचए लगला जे आब की करब..?

घटकक भाँज लगिते बहिरा माए विदा भेली। घटक लग पहुँच बजली- "कोन गाँ रहै छी, केतए जाएब?"

घटक कहलकैन- "एतै, एकटा लड़का उदेसे आएल छेलौं मुदा लड़िकाक नउए बहिरा छिऐ। मन भिनैक गेल। आब घुमि जाएब।"

तैपर बहिराक माए बजली- "जँ बेटा-बेटी खेलाइ पाछू बेहाल रहत आ माए-बापक आदेश नै सुनत, तँ की बाप-माए ओकरा मारतै आकि बहिरा कहि छोड़तै?"

❑

शब्द संख्या: 134

कनीटा बात

कनीटा बात केते नमहर भऽ जाइए ओ आब बुझै छी। पढ़ुआ काका बेटे जकाँ बुझै छला। जे कहै छेलिऐन आँखि मुनि बिसवास कऽ लइ छला। खास कऽ पाइ-कौड़ीबला काजमे कहियो दोहरा कऽ नै पुछलैन।

ओइ दिन कोन दुरमतिया चढ़ि गेल जे मुहसँ झूठ निकैल गेल। खाएर.., तैसंग ईहो गलती भेल जे पुन: ओइ बातकेँ झूठ नै कहि देलिऐन। मुदा हुनका लग कोन झूठपकड़ा मशीन छैन जे ओ बुझि गेला आ कहलैन-

"बौआ, तहूँ तहिना!"

एतबे नहि, 'तहूँ तहिना' कहैत आगूमे थूक फेक देलैन!

तैयो सकपकाइत कहने रहिऐन-

"की, कक्का?"

मुदा पढ़ुआ काका दोहरा कऽ किछु नै बजला, जे आब बुझि रहल छी।

❑

शब्द संख्या: 101

गति-गुद्दा

सोलह बर्खक पछाइत सुखदेव बम्बइसँ गाम आएल। पहिलुका सुखदेवा नै जे ठोर-नमरीसँ जानल जाइ छल। ओ सुखदेव जे बम्बइक गली-कुचीसँ नोकरी करैत सोलहम जिनगी शिवाजी एयर पोर्ट पहुँच गेल अछि। खाली नोकरीए नहि, नोकरी तँ ओहनो होइत अछि जे पानि पीयौनिहार गलियो-कुचीमे रहैए आ एयरपोर्टोमे। ओ सुखदेव जे होटलक मसल्ला पीसब-टा नहि, काजक गति सेहो आ मानसिक गति सेहो तेज केलक। जीप-कारसँ लऽ कऽ ट्रकक ड्राइवर सुखदेव, ग्रेजुएट सुखदेव, आँफिसर सुखदेव!

गाम अबिते सुखदेव भँजियौलक तँ भाँजपर चढ़लै जे भरि गाममे खुशीलाले बाबाटा एहेन रहला अछि जिनकर समांग नै बहरेलखिन। पुरना ढर्ड़ाक लोक खुशीलाल बाबा, जिनगी ओइठामसँ देखने जैठाम पालकी, महफा, ओसारक ओहार, घरक ओहार चलै छल। आइ की देखै छी। मन-चित मारि अपन कुल-खनदानक जड़िमे पानि ढारैत जीब रहला अछि। जैठाम गाम हमरा छोड़ि देलक आ हम गामकेँ छोड़ि देलिऐ, एहेन बहैत धारक त्रिवेणीक मोड़पर खुशीलाले बाबाटा छैथ। कनी जिरेला पछाइत भेँट करबैन।

तीन बजेक समय। सुखदेव खुशीलाल बाबा ऐठाम पहुँच गोड़ लागि अपन परिचए देलकैन।

बाबा बैसैक इशारो करैथ आ सुखदेवक समाचारो सुनैथ। मने-मन

खुशियो होनि जे अही माटि-पानिक बम्बइक शिवाजी टर्मिनलमे ऑफीसर बनल अछि। जहिना साँप अपन छन्द सुनबैत-सुनबैत पड़ा गेल मुदा गड़ूल देखबे ने केलक। तहिना खुशीलाल बाबा सुखदेवक समाचारमे हरा गेला।

बजैत-बजैत सुखदेवकेँ बुझि पड़लै जे भरिसक हम अपने खिस्सा सुनबए एलिऐन। विचार रोकि पुछलखिन-

"बाबा, अपना दिसक की हाल-चाल अछि?"

जहिना पुरना संगी पाबि हृदए खोलि सभ गप करैत, तहिना खुशीलाल बाबा कहलखिन-

"बौआ, ऐठामक गिरहस्तकेँ कोनो गति-गुद्दा अछि। धार माटि दुइर कऽ देलक, कोसी नहर ठीकेदार खा गेल आ मौनसूनी बर्खाकेँ रौदी खा गेल.! की कहबह..!"

❑

शब्द संख्या: 250

बिसवास

पनरह दिनसँ परेशान डॉक्टर परमेसर अपन माझिल भैयाक पेटक ऑपरेशनसँ परसुए पलखैत पौलैन मुदा अपन अस्त-व्यस्त जिनगीकेँ पटरीपर अनैमे दू-दिन आरो लगिए गेलैन। पटरीपर अनैक मतलब भेल निसचित समैपर निर्धारित काज करब।

साँझक सात बजैत। चाह पीब सिगरेट सुनगा पहिलुक दमक धुआँ मुहसँ फेकिते रहैथ की मनमे उठलैन, ऑपरेशन करैबला नीक डॉक्टरमे हमरो लोक जनैए मुदा अपन भाइक मन किए ने मानलकैन? जखन अपने घरक समांग बिसवास नै करत तखन दुनियाँक अशे की? मुदा मझिलो भैया तँ ओहन नहियेँ छैथ जे आँखि मूनि किछु कऽ लइ छैथ।

जेते डॉक्टर परमेसर इनारक पानि जकाँ डोलसँ ऊपर करैथ तइसँ बेसीए पानि तलाव टुटल मोकर जकाँ मनमे भरि जाइन। हाँइ-हाँइ तीनटा सिगरेट पीब गेला मुदा प्रश्नक उत्तरक माटि नइ छूबि सकल। बिसवास करब.., नइ करब.., मनमे ओझरी लगि गेलैन। जहिना नन्हकी काँट बुढ़-बुढ़ानुसक नजैरपर नइ पड़ैत आ धिया-पुता लप-दे निकालि लैत तहिना डॉक्टर साहैबकेँ अन्तिम विचार मनमे अँटैक गेलैन जे भागेसर भैया आन थोड़े छिआ जे लाज-संकोच करब। हुनकेसँ पुछि मन थीर कऽ लेब।

ओना, भागेसरक आदत छैन जे सोझहामे पड़िते पुछि दइ छथिन जे भैया कि काका आकि बौआ, की हाल-चाल अछि। तँए जखने पुछता आकि टटके प्रश्न पुछि देबैन।

आराम करैत भागेसर गपे केनिहारक प्रतिक्षा करैत रहैथ। डॉक्टर परमेसरकेँ लगमे देखिते पुछि देलखिन-

“बाउ, की हाल-चाल?”

‘हाल-चाल’ सुनिते डॉक्टर परमेसर व्याख्या करैत बजला-

“हाल-चाल कथी रहत भैया, अहाँसँ निवृत्ति भेलौं आ एकटा बात मनमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल।”

बिच्चेमे भागेसर टोकलकैन-

“एते भूमिका बन्हैक कोन प्रयोजन, कोन बात?”

“पेटक ऑपरेशनक डॉक्टर हमहूँ, केतेको ऑपरेशन करबो केलौं, आइ धरि अजश नइ भेल। मुदा अहाँ जखन पुछलौं तँ पुछै छी, दोसरकेँ किए पसिन केलिऐ?”

भागेसर कहलखिन-

“बौआ, अहाँ साधारण श्रेणीक लोक नइ छी जे किछु कहि देब। दू रूपमे ज्ञान काज करै छइ। गुण आ निर्गुण। अहाँ छोट भाए छी, जखन पेट काटितौं तखन छाती दहैलियो सकै छल। मुदा देखैक जे भार देलौं से अही दुआरे जे अपन जेठ भाय बुझि नीकसँ तकतियान करब।”

❑

शब्द संख्या: 316

कचहरिया भाय

कचहरिया भायकेँ देखिते नीरस टोकलकैन- “भाय, ओहूँकेँ कचहरिया-उतरी भरिसक नहियेँ उतरत?”

कचहरिया भाय आ नीरस लंगोटिया संगी। भरिसक नै साल तँ महिने, नइ महिना तँ दिने, नइ दिन तँ घन्टे-मिनटक नीरसे पैघ हेतैन। जिनका जनम-टिप्पैन लिखाएल हेतैन तिनका ने आ जिनका नइ लिखाएल हेतैन ओ तँ अपने टीपत...।

कचहरिया-भाय बच्चेसँ चँगला से नीरसमे कम छल। जहिना बौगला पोखैर वा पानिक किनछैर धड़ैत तहिना एकठाम रैन-बसेरा रहितो कचहरिया-भाय कचहरीक लाट पकैड़ लेलकैन। नीरसक प्रश्न कचहरिया भाइक मन हौंर देलकैन। दुनियाँ बड़ीटा छै, झूठ-सच चलिते रहतै। चलबो केना नै करतै, कोनो की अन्हार-इजोत एकदिना छी जे ओरा जाएत? तखन तँ भेल जेतए छी तेतए कुहेसकेँ भगा कऽ राखी। तहूमे नीरस लंगोटिया भैयारी छी, कोन दिनक कोन गप एहेन हएत जे नै बुझल हेतैन। रसे-रसे मनकेँ सोझ करैत बजला-

“बौआ नीरस, रहल तँ रस नइ तँ बेरस। आब अपना सभ अन्तिम घाटक घटवार भेलौं। भगवान तोरा सन बेटा सभकेँ देथुन जे कन्हाक भार उताइर अपना कन्हापर लऽ लेलक।”

आगूक बात बजैले कचहरिया भाइक ठोर पटपटाइते रहैन कि बिच्चेमे नीरस टोकि देलकैन- “अहाँक बेटा की दब छैथ?”

जेना कचहरिया भाइक छाती चहैक गेलैन। फुटल कसताराक दही जकाँ मुहसँ निकललैन-

“रसगुल्ला रसक चहैट शुरूहेसँ लगि गेल जे अपनो बुझै छी। हलवाइक कुकुर जकाँ एक्कोटा रुइयाँ देहमे नै अछि मुदा चहैटो तँ चुहैट कऽ चोहटबे करत।”

बाल-बोध जकाँ नीरस मनकेँ फुसलबैत-बहलबैत कहलकैन-

“अच्छा भाय, एकटा कहू जे जुआनी आ बुढ़ाड़ीमे की बुझि पड़ैए?”

सह पबैत कचहरिया-भाय भगैतक पलगाँइ जकाँ बजला-

“गेल रे जुआनी फेर केतए पएब!”

नहलापर गुलाम फेकैत नीरस भाय बजला-

“कृपा पाबि कियो मूकसँ वाचाल बनैए तँ कियो वाचालसँ मूक..!”

मुड़ी डोलबैत दुनू गोरे जिनगीक कुंज भवनमे घुमए लगला।

❑

शब्द संख्या: 270

गोहाइर

कमला कातक नवटोलीक गहबर बड़ जगताजोर। सएह सुनि अपनो गोहाइर करबैक विचार भेल। भाँज लगेलौं तँ पता चलल जे तीनू वेरागन–सोम, बुध आ शुक्र–भगता भाउ खेलाइ छैथ, मुदा शुक्र दिन तँ साक्षात् कालीए-माइक आवाहन रहै छैन। मन थीर भेल। डाली लगबए पड़ै छै तँए ओरियौनक विचार भेल। मन भेल जे पत्नीकेँ डाली ओरियौनक भार दिऐन। मुदा बोलकेँ रोकि विचार कहलक-

“देवालयक काज छी, एकोरत्ती कुभाँज भेने गोहारियो उनटे हएत। डालीक वौस बाजरसँ कीनए पड़त। मुदा सस्त दुआरे जनिजाति उनटा-पुनटा वौस कीनि लेती।”

मन उनैट गेल। अपने हाथे वेसाहैक निर्णय केलौं।

बजार पहुँच फूल काढ़ल सीकीक रँगर डालीक संग बेसीए दाम दऽ दऽ नीक-नीक वौस वेसाहलौं। मोन पड़ल जे भरि दिन उपासो करए पड़त। चाहो तक नइ पीब सकै छी। जँ पीबैयोक मन हएत तँ गोसाँइ उगैसँ पहिनहि भलेँ पीब लेब।

तनावसँ भरि दिन मन उद्विग्न रहैए। ने काज करैक मन हुअए आ ने कियो सोहाइत रहए। एहेन तनाव दुनियाँमे केकरो भरिसके हेतइ। कोन जालमे पड़ि गेलौं। तहूमे एकटा रहए तब ने। जालक-जाल लागल अछि। जमीन-जत्थाक जाल, जन-जाल, मन-जाल, तन-जाल, शब्द-जाल, अर्थ-जाल, विचार-जाल, वाक्-जाल.., नहि जानि केते जाल बनौनिहार केते

जाल बना कऽ पसारि देने अछि! एक तँ ओहिना इचना माछ जकाँ लटपटाएल छी तैपर सँ जालक-जाल! गैंचीक नजैर तँ नहि जे ससैर-फसैर छछारी कटैत जान बँचा सोल्हैनी जिनगी पाबि लेब। तँए नवटोलीक गहबरमे डाली लगेलौं।

गुहरियाक कमी नहि। अकलबेरेसँ गुहरिया पहुँच पतियानी लगा बैसला। गहबरक भीतर बैस कऽ भगत धियान मग्न भऽ गेला। गहबरसँ उद्वेलित भाव भगतक हृदैकेँ कम्पित करैत रहैन। हाथमे जगरनथिया बेंतक छड़ी नेने भगत गोहाइर करए बाहर निकलला। गोहाइर शुरू करैत बजला-

“भगत-अश्रमसँ श्रमक बाट पकैड़ चलि जाउ। आगू किछु ने हएत।”

भगतक पछाइत डलिवाह चेतौनी दैत बजैत रहथिन- “पाछू घुमि नै ताकब। केतबो जोगिन सभ कानि-कानि किए ने बाजए मुदा घुमि नै ताकब।”

हमरो नम्मर लगिचाएल। मुदा एक्के वाक् सुनि उत्सुकता ओते नहियेँ रहए जेते नव वाक् सुनैक होइत। अनेरे मनमे तुलसीक विचार उठि गेल। कहने छैथ जे जेकरा जंजाल रहै छै तेकरा ने चिन्ता होइ छइ मुदा जेकरा नै छइ..?

तही बीच भगत हमरो सोझहामे आबि पैछले बातकेँ दोहरबैत एकटा नव बात पुछलैन-

“छुटि गेल किने?”

बिनु तारतमे बजा गेल-

“हँ।”

विदा भेलौं। बाटमे विचारए लगलौं जे अश्रमक अर्थ की होइ छइ?

मुदा कोनो अर्थे ने लागल। हारि कऽ ऐ निष्कर्षपर एलौं जे एक सोगे आएल छेलौं दोसर नेने जाइ छी।

गाम अबिते टोल-पड़ोसक लोक भेँट करए आबए लगला। सभ एक्के बात पुछैथ-

“की भेल?”

किछु गोरेकेँ प्रश्ने बना कहलयैन-

“अश्रमक अर्थे ने बुझलौं। अहीं कहू।”

मुदा जेते मुँह तेते रंगक उत्तर भेटए लगल। सुनैत-सनैत मन घोर-मट्ठा भऽ गेल। पछाइत जे कियो पुछैथ तँ कहए लगलयैन-

“जहिना छेलौं तहिना छी। जहिना छेलौं तहिना छी।”

❑

शब्द संख्या: 432

शिवजीक डाक-बाक्

चौदहो भुवनक भ्रमणमे काक-भुशुन्डी वौराएल रहैथ, तैबीच शिवजीक संग गुरुओजी पहुँचलैथ। सज्जा सजल शव जकाँ काक-भुशुन्डी ने गुरुएजीकेँ आ ने शिवजीए दिस तकलैन। मणिक जोहमे अपने समुद्रमे डुमकी लगबैत रहैथ।

दलदल पानि सदृश गुरुजी तँए कोनो आनि-पीड़ा नै भेलैन। मुदा पाछू पिछड़ैत काक-भुशुन्डीकेँ देखि शिवजीक क्रोध सीमा तोड़ि बहरा गेलैन। शाप दैत बजला-

“जो रे अभगला! तों अजेगरोक कान कटलँह। जो तूँ साँप हेमे।”

❑

शब्द संख्या: 70

सोग

आने दिन जकाँ तरगरे प्रोफेसर लीलाधरक नीन टुटलैन। जेना आन दिन नीन टुटिते ओछाइन छोड़ि टहलए विदा भऽ जाइ छला से आइ नइ भेलैन। ओछाइन छोड़ैसँ पहिनहि मनमे उठि गेलैन- 'एक्कैस मार्चकेँ पचास बर्ख पूरि एकावनममे प्रवेश कऽ रहल छी।'

प्रोफेसर लीलाधरक मनमे एलैन जिनगीक पचास बर्ख। जँ साइए बर्खक अधार बनबै छी तैयो अदहा टपि गेलौं। मुदा से केना हएत? जिनगी तँ विभाजित अछि। तँए एकक पछाइत दोसरमे प्रवेश आ पैछलाक नीक-अधलाक समीक्षा। मुदा हिसाबे उकड़ूमे पड़ि गेल अछि। साए बर्ख जीबे करब तेकर कोनो गारंटी अछि। तखन अदहा केना मानब? लगले नजैर नोकरी दिस बढ़लैन। जइ दिन नोकरी शुरू केने रही तइ दिन बत्तीस बर्ख जोड़ने रही। गुन भेल जे तीन बर्ख बढ़ि गेल, पैंतीस बर्खक नोकरी भऽ गेल जइमे पच्चीस बर्ख पूरि गेल अछि। दसे बर्ख बँचल अछि। अहू पच्चीस बर्खमे आठ बर्ख ओझे-गुनी खेलक। सतरह बर्खक नोकरीकेँ नोकरी बुझलौं, जखन कौलेज सरकारी भेल। एकाएक बीस गुना जिनगीमे उछाल आएल। साठि हजारक नोकरी कोनो मामूली छी, जैठाम अखनो केतेको लोक पेटेपर खटैए। मुदा जहिना तीआरि जालक ओझरीकेँ छोड़बै दुआरे लोक पूजियो गमा फेकिए दैत अछि। मुदा से तँ लीलाधरकेँ नइ भऽ पाइब रहलैन हेन। ओझरी जेते छोड़बए चाहैथ तेते अमती काँट जकाँ ओझराइते जाइ छेलैन।

तखने पत्नी ओछाइन छोड़ि, कपड़ासँ मुँह पोछि ऐनामे देख,

कटोरिया धोइध नेने फुदकैत विजयी-मुस्की दैत पतिक ओछाइन लग पहुँच मुँह दिस तकलखिन।

टक-टक आँखि तकैत लीलाधर पत्नीकेँ नै देखलैन। मनुक्ख की चिड़ै आकि कौछ छी जे अण्डा दऽ पड़ा जाएत। पड़ाएल आकि पड़ौल गेल ऐ प्रश्नमे लीलाधर ओझरा गेला।

टकटकी देखि पत्नी डरि गेली। मुदा तैयो अपन अर्ज निमाहैत बजली-

“कथीक सोग..?”

प्रोफेसर लीलाधर बजला-

“किछु ने!”

मुदा मनमे रहैन जिनगीक सोग। मरैयो बेर तक पत्नी सिरे चढ़ि खेती। काल्हि धरि की केलौं? यएह ने जे तेते हित-अपेछित बना लेलौं जे सालक दस प्रतिशत कमाइ भोजे-भातमे चलि जाइए। तैपर अपनो सभ दिन अनके खेबै, से केहेन हएत। मुदा सभ दिन जँ भोजे खेबै तँ विद्यापतिक हिसाब–अदहा जनम हम नीन गमाओल–केँ की करब। एक तँ किछुओ पाइ जमा नइ करि सकलौं आ जेहो केलौं ओ दस बर्खक बादे भेटत। की तीनू बच्चाकेँ आगूक शिक्षा दऽ पाएब?

❑

शब्द संख्या: 341

पनचैती

परसूसँ सौंसे गाममे यएह चरचा जे ई पनचैती केना हएत। एक दिस सोनेलाल बाबा आ दोसर दिस विधायकजीक प्रतिनिधि। तहूमे खासे मसियौत सेहो छिऐन। विधायकजी भिन्ने गजुआइत जे एक जातिक भोँट प्रभावित हएत। मुदा अपनो आदमी किछु नै कहत सेहो बात तँ नहियेँ। नीक हएत अस्पताल धऽ ली। भेँट करए सभ एबे करत, ओतइ सँ फरिया देब।

सोनेलाल बाबाक दियाद-वाद, जाति-समाज इन्दिरा आवासक भाँजमे। तँए या तँ गबदी मारि दैत या तँ सोझहा एबे ने करैत। पुतोहुक दुआरे बेटोसँ मिलान नहियेँ जकाँ। मुदा बिना फरियौने तँ टुटल गाड़ीक पहिया जकाँ गेबे करत- 'काँकोड़ रोटी'

चेहरासँ सोनेलाल बाबा अस्सी बर्खक बुझि पड़ै छैथ मुदा छैथ छियासैठे बर्खक। जरल मनमे आगि उठलैन। तीन साल पहिने इन्दिरा आवास वएह प्रतिनिधि विधायकजीक सोझहामे गछलखिन। सोनेलाल बाबा तही दिनसँ वौआइ छैथ। मुदा अखन धरि नै भेटलैन। वेचाराक मनक धधरा ओइ दिन धधैक उठल जइ दिन सोनेलाल बाबा पुछलखिन-

"नेताजी, दौगैत-दौगैत टाँग टुटि गेल। आबो कहू?"

प्रतिनिधि कहलकैन-

"आइक युगमे बिना खुऔने-पीऔने काज चलै छइ?"

सोनेलाल बाबा बजला-

“ई बात ओइ दिन किए ने कहलौं जइ दिन हमरो हाथमे भोँट छल।”

“अखन एते छुट्टी नइए, दोसर दिन बात करब।”

पगलाएल सोनेलाल बाबा की केलैन से अपनो नै बुझलखिन।

❑

शब्द संख्या: 195

कनमन

साढ़े चारि बजैत। हाइ स्कूलसँ अबिते सुधीरक नजैर दरबज्जापर बैसल बाबा–श्याम सुन्दर–पर पड़लैन। बाबाक खसल मन देखि दरबज्जा-अँगनाक बीच मोड़पर सुधीर तेकठी जकाँ ठाढ़ भेल। केमहर डेग बढ़ौत से फरिछेबे ने करइ। पहिने बाबाकेँ पुछिऐन जे किए मन खसल अछि, आकि किताब रखि कपड़ा बदैल आबी। रस्तेसँ भूखो-पियास लगल अछि। नबे बजेक खेलहा छी...।

तेकठीक तीनू खुट्टाक बीच अपनाकेँ सुधीर पौलक जे दूटाक कनाइत 'तेकठी' नाओं धरबैए जखन कि तेसरक नाओं 'गोड़ी' भऽ जाइ छै, जेकरा ऊपर लाद लादि लदाना दइ छइ। बाबाक बात बुझब सभसँ जरूरी अछि, मुदा बरदाएल हाथे कइए की सकबैन..?

कपड़ा बदलब ओते महत नै रखैए तँए एना करी जे बाबाकेँ कहिऐन- हमहूँ आबि गेलौं जइसँ जाबे ओ अपन बात बजता-बजता ताबे पोथी रखि आएब। कनी डेगेमे झाड़ आनए पड़त...।

सहए करैत बाजल-

"बाबा, किए मन खसल अछि?"

कहि पोथी रखए आँगन गेल। पोथी रखि श्याम सुन्दरक लग आबि सुधीर बाजल-

"बाबा, मन खसैक कारण की अछि?"

आस-निआसक बीच श्याम सुन्दर ओझड़ाएल छला, तँए नजैर

खसल छेलैन। पोताक प्रश्न भारी पबै छला। चालीस बर्खक संगी हेरा-फेरीमे जहल चलि गेल छेलैन, तेकरे सोग रहैन। मुदा बाल-बोध लग बाजी वा नै बाजी? छिपाएब झूठ हएत नै छिपाएब सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। नीकक चर्च हेबाक चाही, अधलाक तँ फलो अधले हएत...।

सोचैत-विचारैत श्याम सुन्दरक मनमे उठलैन- एहनो तँ भऽ सकैए जे छिपबैत-छिपबैत छिनारक छिनरपनीए छीप जाए! मुदा एहनो तँ भऽ सकैए जे एक-दोसराक अधला छिपबैत-छिपबैत छिपारेक समाज बनि जाए! ..तत्-मत् करैत श्याम सुन्दर बजला-

"बौआ, अखने सुनलौं जे रूपलाल जहल चलि गेल। मिरचाइक झाँझ जकाँ वएह मनकेँ मलीन केने अछि।"

श्याम सुन्दर जे कहि अपनाकेँ हटबए चाहैथ से लगले नइ हटलैन। कारण भेल जे जहलक नाओं सुनि सुधीर दोहरा देलकैन-

"किए रूपलाल बाबा जहल गेला?"

सुधीरक प्रश्न श्याम सुन्दरकेँ ज्वर आनि देलकैन मुदा ज्वार नै बनि तुरछैत ज्वारि तँ आबिए गेल रहैन। बुझबैत कहलखिन-

"एते पुरान रहितो रूपलाल समयकेँ ठेकानबे ने केलक। पुरना चालिसँ आब काज चलैबला छै! बुझथुन जे केहेन दादासँ पल्ला पड़ल।"

❑

शब्द संख्या: 323

अजाति

गुरु काका, बड़का काका, पढ़ुआ काका, लालकाका, भैया काका, दोस काका, संगी काका सभ कियो एकठाम बैस रघुनाथक गप चलौलैन। गुरु काका बजला-

“शेतानक चरखी अछि रघुनत्था।”

सह मारैत बड़का काका बजला-

“एहेन छुतहर एकोटा ने कुल-खनदानमे भेल!”

अस्पष्ट विषय आ स्पष्ट एकमुहरी गप देखि दोस काका बजला-

“एना गौं-गौं केने नै हएत। किछु स्पष्ट विचार करए पड़त।”

अपन भार हटबैत पढ़ुआ काका टपकला-

“भने दोसक विचार छैन। लाल भाय अहीं अपन निर्णय सुना दियौ।”

गम्भीर होइत लालकाका फैसला देलखिन-

“रघुनाथ अजाति भऽ गेल।”

❑

शब्द संख्या: 90

पटोर

किशोरी ऐठामक बिआहक काज तेतरी सेहो देखलक। पक्का पति-भक्त तेतरी। राति-दिन पतिक विचारक सेवा हृदैसँ करैत।

रंग-रंगक पटोर साड़ी पहिरल देखि लाड़-झाड़ करैत पति–गुलेती–कैँ तेतरी कहलक-

“हमरो पटोर साड़ी कीनि दिअ?”

अनुकूल रखै दुआरे गुलेती अनुकूल शब्दक सहारा लैत सोचए लगल जे जहिना अन्हार घर साँपे-साँप होइ छै तहिना ने दुनू बेकती छी। रंगक चमकी देखि ओ (तेतरी) लटुआएल अछि आ अनुकूलक अपने लटुआएल छी। मुदा छी तँ दुनू एक्केरंग। जखन एक्केरंग छी तखन बीचमे बाधा कथीक। जेहने अपने पटोर साड़ीक सम्बन्धमे जननिहार, किननिहार छी तेहने ने ओहो अछि। तखन तँ भेल जे ‘की परसै छी तँ फूसि। तहन कनी लगाइए कऽ देबै...।’

ओना, अपन आँट-पेट देखि गुलेती सहमल नहि। बुझलक जे जहिना गुलेतीक शिकार तहिना ने मुँहक शिकार होइए। दुनूक सोल्हैनी गारंटी थोड़े अछि। तहूमे चोबिसो घन्टा संग रहनिहारि नारीक नश-नश नै बुझी तँ ई केकर दोख...।

जहिना कलीसँ गुलाब छिटैक छिटकए लगैत तहिना चौअन्नियाँ मुस्की छिटकबैत गुलेती बाजल-

“केहेन पटोर लेब?”

जहिना स्वर्गक आशामे लोक, सभ किछु दान करैले तैयार रहैए तहिना पटोरक आशामे तेतरी। हजारोक भीड़मे जहिना प्रेमी प्रेमीकेँ पकैड़ सटि जाइत तहिना गुलेतीक हृदैमे तेतरी सटि गेल। गोदीक बच्चाक सुतैक भार जहिना गोद लैत तहिना अलिसाएल तेतरी बाजल-

"जेहने किशोरीक अँगनामे देखलिऐ।"

"एक्के रंगक देखलिऐ?"

"नहि, सभ रंगक रहइ।"

एकटा संगी रहने ने लोक हराइए मुदा जँ तइसँ बेसी होइ तखन केना हराएत? जेतइ हराए लगत तेतइ संगी भेट जेतइ। ..पत्नीकेँ हराइत देखि गुलेती बाजल-

"अहाँक विचार नै मानब तँ दुनियाँमे केकर विचार मानैबला अछि। अहाँकेँ हाथ पकैड़ अनने छी तहन विचार केना नै मानब। अहाँक मांग मानि लेलौं, कागतमे लिख लेलौं। जइ दिन बजार जाएब तइ दिन कीनने आएब। खाली बजार जाइ-घड़ी पुरजी मोन पाड़ि देब अहाँ। अच्छा एकटा बात बुझल अछि, ओ साड़ी एक्के बेर पहिरला पछाइत खीचल जाइ छै? से सभ दिन केतए खीचबै?"

'साड़ी खीचब' सुनि तेतरीक विचार ठमैक गेल। बाजल- "तखन ऐ बेर छोड़ि दियौ। आगू साल अगते कीनि देब।"

भार घुसकैत देखि गुलेती दुनू जाँघपर हाथक शान पिजबैत बाजल-

"कहू तँ भला, अच्छा अहीं मोन पाड़ि दिअ जे एतेक उमेरमे अहाँक कोन गप कहिया कटलौं?"

केकरो गप अपने टुटि जाइ छै तँ ऐमे केकर दोख। हँ तखन ई बात जरूर भेल अछि जे गामक चालि बदलल। पहिने गाममे चोरकेँ अबिते

जएह देखलक सएह 'चोर-चोर' हल्ला करए लगै छेलै, मुदा अर्थक चक्का तेहेन दिशा पकैड़ लेलक जे सामाजिकता तहस-नहस भऽ गेल अछि। जहिना राम-रावणक बीचक जे तीर चलइ आ दस-दस-बीस-बीस गरदैन कटि हवामे उधियाइत एकठाम भऽ सटि जाइत, तहिना ने भऽ रहल अछि।

❑

शब्द संख्या: 409

(ई बीहैन कथा–"पटोर"–श्री मनोज कुमार कर्ण उर्फ मुन्नाजी-ले...)

फुसियाह

सुभितगर समय भेने अनुकूल काजक विरधी जिनगीकेँ आगू मुहेँ ओहिना ससारैए जहिना प्रतिकूल भेने विपरीत दिशामे पाछू मुहेँ ससारैए। मुदा किछु भेद तँ भइये जाइ छइ। ओ छी कम-बेसीक गणित।

साँझक आठ बजैत। ओना, माघक आठ, 'राति' कहबैए मुदा से नहि, सौन-भादोक आठ, 'साँझे' कहबैए। आठ घन्टा दमकल चला घरपर आबि कमलदेव गदगदाएल मने पत्नी–सुचित्रा–केँ कहलखिन-

"पहिने चाह पिआउ, पछाइत एकटा गप कहब?"

जहिना कर्मकेँ वचन सदिछन दबैत रहैए तहिना सुचित्रा चाह बनबैसँ पहिने हठ करैत बजली-

"सुनल रहत तँ चाहो बनबै बेर विचारब, ओना, खटखुट मन केने कहीं चाहो ने दुइर भऽ जाए। से नइ तँ कहिए दिअ"

पत्नीक बात सुनि कमलदेव सोचमे पड़ि गेला। शुभ काजमे अशुभ बात ओहन करामात कऽ दैत जहिना एकटा छिक्का हाइ-कोर्टक फैसला उनटा-पुनटा दैत अछि। हो-ने-हो कहीं अही गपक धुनिमे चाहक धुनि बिसैर जाइथ। तखन तँ दिन-भरिक मेहनत मेहनते रहि जाएत, बजला-

"अनेरे कोन झूठ-फूसक फेरिमे पड़ै छी पहिने चाह पिआउ, तखन दुनियाँ-दारीक गप-सप्प हेतइ।"

मुस्की दैत सुचित्रा बजली-

"तँए ने पहिने घर-परिवारक काज निबटा लिअ चाहै छी। अहाँ

सन पुरुख हम थोड़े छी जे भरि दिन छाती भरे खटै छी आ गामक लोक ‘फुसयाहा’ कहैए।”

पत्नीक बात सुनि कमलदेवक मनमे झोंक एलैन। जहिना गुम हवामे सुरूजक ताप अपन करामात करैत तहिना एक तँ कमलदेवक मनमे चाहक झोंक चढ़ल रहबे करैन तैपर सँ पत्नीक मुहेँ ‘फुसियाह’ सुनि आरो तेज भऽ गेलैन, बजला-

“ने अहाँ कहने कटहर हएत आ ने गौंआँ कहने बरहर हएत। कटहर कटहरे रहतै, बरहर बरहरे रहतै। एक रंग आँठी-कमड़ी भेनहि की हएत?”

पतिक विचारकेँ अँकैत सुचित्रा बजली-

“अहाँ तमसा गेलौं। तमसाउ नहि। लोक जे अहाँकेँ फुसयाहा कहैए तेकर कारण अछि जे काजक हिसाबसँ समय नै दइ छिऐ, घड़ीक हिसाबसँ समय दऽ दइ छिऐ।”

पत्नीक विचारकेँ अँकैत कमलदेव दोहरबैत पुछलखिन-

“कनी फरिछा कऽ कहिऔ?”

सुचित्रा कहलकैन-

“केकरो खेत पटबैक जे समय दइ छिऐ ओ खेतक हिसाबसँ समय दियौ। काजक समय दोसर होइ छै आ घड़ीक समय दोसर।”

❑

शब्द संख्या: 311

गति-मुक्ति

सज्जासनसँ उठि आँखि मीड़िते बाबा रमचेबलाकेँ उठबैत कहलखिन-

“रे रमचेलबा, दिन-रातिकेँ लोक एकबट्ट करैक भाँजमे अछि आ तूँ ढेंग जकाँ पड़ले रहमेँ?”

आँखिक काँच-सुखल काँची पोछैत रमचेलबा ओछाइनेपर सँ बाजल-

“जे कहै छहक से तँ कइए दइ छिअ। तखन ढेंग किए कहै छह?”

जाधैर बाबा नहलापर गुलाम फेंकितैथ ताधैर ओछाइनपर सँ उठि रमचेलबा लगमे पहुँच गेलैन। बाबा बजला-

“रे तों तँ हमर ने कऽ दइ छैं, तइसँ हेतौ।”

मुँह बाँबि जहिना चूजा अहार मंगैत तहिना रमचेलबा पुछलकैन-

“तब?”

रमचेलबाक जिज्ञासा देखि बाबा कहलखिन-

“अपना-ले कर।”

बाबाक पक्का चेला रमचेलबा। एक पाइ बाम-बुच नहि। मुड़ी डोलबैत बाजल-

“अच्छा, गिरह बान्हि लेलियह। मुदा ढेंग किए कहलह?”

रमचेलबाकेँ मानै-जोकर भाषामे बाबा कहलखिन- “देख, जाबे

गाछक शील काटि कऽ रखल रहै छै ताबे ढेंग कहबै छइ। ओकरे जखन आड़ा-मशीनपर लऽ जा तख्ता चीरा नाव बना पानिमे दौड़बै छै तखन ओहो अपन भरि पेट आदमीकेँ धारमे झिलहोरि खेलैत पार करै छइ। मुदा एकटा बात कहि दइ छियौ, जे जे पुछबाक होउ से पुछि ले, किए तँ एको मिसिया जीबैक मन नइ होइए।"

पाछू उनैट रमचेलबा तकलक तँ बुझि पड़लै जे जाबे जीबैक लूरि नइए ताबे जीबै केना छी। तहूमे बाबाक संगे। मुदा बुढ़-बुढ़ानुसक बिसवासे केते जँ कहीं टटके आँखि मूनि देलैन तखन तँ अपनो मन आ हुनको मन लगले रहि जेतैन। बजला-

"बाबा हौ, गति-मुक्ति केकरा कहै छइ?"

रमचेलबाक प्रश्न सुनि बाबा विह्वल भऽ गेला। भावावेषमे बजला-

"चौबिसो घन्टा जँ समयक संग मनोनुकूल जिनगी जीबए लगी, सएह भेल गति-मुक्ति।"

❑

शब्द संख्या: 238

चौकीदारी

तीन दिन झंझारपुर-मधुबनी दौड़-बरहा केलाक पछाइत चौकीदार रामटहल दास पैछला आठ मासक दरमहो आ आनो-आन भत्ता उठा सात बजे गामपर पहुँचल माने घर पहुँचल। रस्तेसँ निआरि लेलक जे आरो जे हेतै, से पछाइत हेतै पहिने भरि पोख सुतब। तीन दिनक दौड़-बरहा कोनो लज्जैत देहक रहए देलक। ने नहाइक ठेकान आ ने खाइक। ठाकुरोजी-कैँ एक लोटा जल नै चढ़ा सकलौं। खाएर जे हौउ, 'जे पूत हरबाहि गेल, देव-पितर सभसँ गेल।' मुदा ओछाइनपर पहुँचैसँ पहिने जे काज अछि से तँ करए पड़त...। मुँहक रोहानीसँ पत्नी परेख नेने रहैन तँए पाँचटा तरुआ-भुजुआक ओरियानमे जुटि गेल छेली।

स्नान-धियान, तिलक-चानन आ पूजा-पाठ करि रामटहल दास भोजन करए आँगन पहुँचल। अँगनाक चुहचुही देखि मनमे खुशी भेलइ। मुदा चुहचुहीक कारण नजैरपर पड़बे ने केलइ। पत्नीपर आँखि पड़िते आँकि लेलक जे चुहचुही आँगनक किरतबे नहि, आँगनवालीक किरतबे भेल अछि।

चिक्कनि माटिक ठाँओं, नमगर-चौड़गर आसनपर बैसते पाँचटा तरुआ, पाँचटा भुजुआक संग अचार-चटनी सजल थारी राम टहल दास आगूमे देखलक। देखिते पत्नीसँ किछु पुछैक विचार भेलै मुदा थारी रखि रामपियारी सुतैक ओछाइन सेरियौनाइकैँ काजक एक नम्मर सूचीमे रखने, तँए अखन गप केना करितैथ। सरकारीकरण नै भेलासँ पहिने चौकीदारी समाजक दायित्व बुझल जाइ छल। टैक्सक रूपमे चौकीदारी

छोट-पैघ किसानसँ लेल जाइ छल आ पनरह रुपैआ मासिक वेतनक रूपमे देल जाइ छल। अन्हरियाक सप्तमीसँ लऽ कऽ इजोरिया खष्टी धरि, माने पनरह दिन धरि गामक पहरा चौकीदार करै छल।

..गाममे दूटा चौकीदार तँए एकर्कें हाथमे फरसा आ दोसरकेँ हाथमे भाला रहै छल। घरसँ निकैलते चौकीदार जोरसँ टाँहि दइ छल जइसँ गामोक लोक बुझि जाइ छेलै जे पहरूदार पहरा दइले निकैल रहल अछि। निन्न टुटिते बीड़ी-तमाकुलक संग केतौ माल-जालक तकतान तँ केतौ लघी-बिरती शुरू भऽ जाइ छल। टोले-टोले घुमि-घुमि चौकीदार ठहकबो करैत आ जगेबो करैत। जँ केतौ चोर अभड़ै तँ संग मिलि आगू-आगू दौगबो करैत।

..विल्कुल पारदर्शी कारोबार छल।

ओछाइनपर पति–रामटहल दास–केँ देखिते रामपियारीक मन सिहरलैन। मन सिहैरते विचारक भाव बदललैन। एक तँ कमासुत पति तोहूमे आठ मासक बँकियौताक गरमी। बदलल मनमे उठलैन जानक जंजाल परिवार होइए। जानकेँ अकछ-अकछ केने रहैए। एक बोल दुनू परानी गपो करब सेहो ने होइए...।

रामपियारीक मन घुमलैन। तँए कि लोक मनो-मनोरथ छोड़ि देत। सहैट कऽ पति लग आबि बजली-

“दरमाहा उठबैमे पाइयो-कौड़ी खर्चा भेल?”

पत्नीक जिज्ञासा भरल शब्द सुनि रामटहल बाजल-

“जाबे बबाजी नै भेल छेलौं ताबे आ अखनमे बड़ अन्तर भऽ गेल अछि। सौंसे थानाक सेक्रेटरी छी। आन-आनकेँ तँ खर्चा हेबे करै छै मुदा हमरा नै होइए।”

तैपर पत्नी पुछलखिन- “केते भेटल?”

'केते भेटल' सुनि रामटहल दासकेँ, जहिना सीक परहक मटकूर खसिते टुकड़ी-टुकड़ी भऽ छिड़िया जाइत तहिना भेलइ। सुखक नीनकेँ छोड़ए नै चाहलक। मुदा तैयो बजाइए गेलइ-

"भेटत की अल्हुआ! धैन समाज अछि जे मुँहक लाली अछि नइ तँ अठ-अठ महिना पेट बान्हि के खटत। जेकरा ऊपर-झपटी छै तेकरा ने, हमरा कोन अछि।"

❑

शब्द संख्या: 442

झगड़ाउ-झोटैला

भोरे अर्द्धांगिनीक रगगड़सँ ठमैक लालकाका दरबज्जाक बीचला खुट्टामे ओंगैठ कुही होइत मने-मन विचारै छला जे औझुका दिन भंगठले अछि। जहिना यात्रा-काल भंगठल इंजनक कोनो भरोस नहि, तहिना पत्नीक खटपटसँ लाल कक्काक मनमे होइत रहैन। औझुका दिन केहेन हएत केहेन नहि, तेकर कोनो ठेकान अछि। अपनो किछु हूसलौं। हूसलौं की! पावर चढ़ल छेलए। ओह: भोरे लोक राम-नाम लैत उठैए आ हमरा कोन दुरमतिया चढ़ि गेल से नहि जाइन। कोन एहेन पहाड़ टुटि खसल जाइ छेलै जे भोरे अढ़ौती-अढ़ा देलिऐन। निअमानुसार अपन-अपन पुरौला पछाइते ने कियो दोसर दिस देखत...।

तैबीच हाथमे चाहक गिलास नेने मुस्कियाइत पत्नीकेँ अबैत लालकाका देखलैन। जेना कोनो कोकनल खुट्टाबला घर हड़हड़ा कऽ खसैए तहिना लालकाका अकाससँ खसला। मुदा भिनसुरका तामस सोल्होअना नै मेटाएल छेलैन, तँए चाह-ले हाथ नै बढ़ौलैन। ससुराएल लोक जकाँ लालकाकाकेँ देखि लालकाकीक मनमे उठलैन जे पुरुख छिआ आकि पुरुखक झड़! हाथ पकैड़ कहबैन जे चाह लिअ? आगूमे ताड़क गाछ जकाँ लालकाकी ठाढ़ रहली।

जहिना नमहर गाछक ऊपरका डारि टुटि डारि-डारिपर रूकि-रूकि कऽ निच्चाँ खसैत तहिना लालकक्काक मन फेर खसलैन। थोड़े सवुर मनमे सेहो भेलैन जे दुपहरियाक खेनाइ नै गड़बड़ाएत। पाछू उनैट तकला तँ

मोन पड़लैन जे एहेन-एहेन झगड़ा तँ बेसी-काल होइए। मुदा खेनाइ-पीनाइमे कहाँ कहियो बाधा भेल। ओह! तामसमे बिसैर गेल छेलौं। पत्नीक चौअन्नियाँ मुस्कीक जवाबमे लालकाका अठनियाँ ठाह दैत हाथक गिलास पकड़ैत बजला-

"मीठगर चाह अछि किने?"

लालकाकाकेँ मुँहमे गिलास लगबै धरि लालकाकी ठमकल रहली, मुदा मुहसँ गिलास हटैबते बजली-

"ठोरमे ठोर सटैए किने?"

चाहक गरमी लालकाकाकेँ चढ़िते रहैन। अवसरकेँ बिनु गमौने बजला-

"दूधसँ नै चीनीसँ।"

❑

शब्द संख्या: 243

घबाह ट्यूशन

घिड़नीक तिनकमिया बंशीक घबाएल माछ जकाँ बुधियार काका बीस बर्खक नोकरीक पछाइत घबाएल मने अपना दिस तकलैन। घबाएल मन अइले जे प्रतियोगिता परीक्षामे बैसै-जोकर बेटा भऽ गेलैन। उचित तँ यएह ने बनैत जे वयस देखि-देखि अपन विषयक बात बेटोसँ पुछि लेब। एकर मतलब ई नहि जे छौड़ाकेँ बापक पैरक जूतो आ देहक अँगो अँटि जाइ छइ। जइ दिन नोकरी शुरू केलौं, तीन मन धान महिना गौंआँ मिलि दइ छला। राजा-रजबारक गाम नहि, जे स्कूल-अस्पताल खुजत। परिवारो तहिना छल, गौंआँक मुँह देखि कोनो-धरानी गुजर करै छेलौं आ गामेक बच्चाकेँ पढ़ेबो करै छेलौं। अपनो बुझि पड़ै छल आ समाजो शिक्षक बुझै छला।

अपने ऊपर दुरिमतिया चढ़ल आकि समाजक ऊपर चढ़लै आकि सरकारक ऊपर चढ़लै से बुझबे ने करै छी। जे विद्यालय या तँ बेकती-विशेषक वा सामाजिक स्तरपर चलै छल ओकरा आगू केना बढ़ौल जाए ई मूल प्रश्न छल। मुदा भेल की..?

खाली संस्कृते विद्यालयकेँ कहबै आकि मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि जेनरल विद्यालयकेँ, सभटा एक्के सिरहाने पेटकुनियाँ लधने अछि।

प्रकाशकेँ सोर पाड़ि बुधियार काका कहलखिन-

“बौआ, आब तोरा-ले दुनियाँक बहुत बाट खुजैक समय आबि गेलह मुदा समय एहेन बनि गेल अछि जे जेते सहयोगक जरूरत तोरा

पड़तह ओते नै दऽ सकबह। अपनो जुआन भेल जाइ छह, अपनो तँ किछु सोचिते हेबह?”

पिताक विचार सुनि प्रकाश बाजल-

“बाबूजी, ट्यूशनक नव क्षेत्र तँ बनिते जा रहल अछि, बुझल जेतइ।”

प्रकाशक विचार सुनि, कनी-काल गुम रहि बुधियार काका बजला-

“बौआ, तीनटा विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ा अपनो शिक्षक बनलौं, मुदा आब लड़कीक शिक्षा बढ़लासँ ओहो घबाह भेल जा रहल छइ।”

❑

शब्द संख्या: 244

दादी-माँ

सत्तैर बर्खक दादी-माँकेँ अखनो वहए चुहचुही गाममे बुझि पड़ै छैन जे चुहचुही सासुरमे सभकेँ बुझि पड़ैत। जइ दिन रंगल वस्त्र, भरल पेट, काजर लगौल आँखिसँ गाम देखलैन ओ जीते-जी केना बिसैर जेती।

ओना, दादी-माँकेँ परिवारमे दू पीढ़ीसँ मुखतियारी चलि अबैत मुदा पलखैतक दुआरे ऐ बातपर नजैरे ने कहियो गेलैन। कारणो अछि जे दू तरहक जिनगी लोककेँ भेटै छै, एककेँ बनल-बनाएल आ दोसरकेँ टुटल-फुटल। टुटल-फुटल घरकेँ दादी-माँ सभ दिन चिकने करैमे लागल रहली तँए सासुरक सुख दिस धियाने ने गेलैन। एक तँ औहुना जे कुरसीपर बैस जाइए ओ थोड़े बुझै छै जे कुरसीक पुबरियो पार छै आ पछबरियो पार। तँए जिनगीकेँ तीनू पार देखैक लूरि हेबाक चाही। मुदा से दादी-माँ केँ नइ छैन, परिवारक सबहक धौजैन सुनैक अभ्यस्त छैथ तँए आश्वासन तँ सभकेँ दइते छथिन मुदा जे पहिने बिसरै। सत्तैर बर्खक अपनाकेँ नै बुझि दादी-माँकेँ छोड़ल केचुआ जकाँ लहलही छैन्हे। तहूमे कोरा-काँखकेँ सभ दिन बच्चा सभकेँ लैत रहली तँए रहबो किए नै करतैन।

छह बर्ख पहिने परिवारमे एकटा गाए एलैन। जहिना मनुक्खसँ लऽ कऽ बाध-बोन धरि लक्ष्मी छिड़ियाएल छैथ तहिना दादी-माँ गाएकेँ बुझि सेवा करए लगली। थैर-गोबर अपन काजक सूचीमे लऽ लेलैन। छबे बर्खक दौड़मे आइ दसटा गाए खुट्टापर छैन। पहिने एकटाकेँ थैर-गोबर करैक अभ्यास छेलैन अखन दसटा-क भऽ गेल छैन, किए मनक चुहचुही

कमतैन।

ओना, अखन धरि सभ तूर परिवारक काजमे सटि चलै छैन मुदा दुनू पुतोहुओ आ भाइयोमे खटपट हुअ लगलैन से भनक छैन मुदा जेकरा जे मनमे हेतै से तेहेन पाऔत, तँए धैनसन। दुनू बेटो आ पुतोहुओक बीच उठैत विवादक कारण पिता–शिवशंकर–नीक जकाँ बुझैत रहथिन। जैठाम लाखक विधायक, सांसद, वेपारी, ठीकेदार करोड़मे कुदि अरबमे टहैल रहल अछि, तैठाम मनक उछाल सोभाविके। तँए शिवशंकर गुम्म छला।

जहिना दृष्टिकूट विश्राम बेर होएत तहिना दादी-माँकेँ बुझि पड़लैन। पति–शिवशंकर–सोझहासँ गुजैरते रहैथ कि दुनू बेटा, ताल ठौकैत पहुँचलैन। दुनू बेटाकेँ देखि अधरस्तेपर दादी-माँ अँटैक गेली। शिवशंकर पुछलखिन-

“तोरा दुनू भाँइक बीच एना किए होइ छह?”

पिताक प्रश्नसँ दुनू भाँइ प्रकाशो आ जोगियो एक दोसरपर दोख मढ़ए लगल। तही बीच आँगनमे दुनू पुतोहुओ डंका पीटए लगली। शिवशंकर बुझि गेला जे अँगनेक आगि असमसान तक जाइ छइ। भार हटबैत शिवशंकर दुनू भाँइकेँ कहलखिन-

“माएसँ पुछि लहक?”

अपना-अपनीकेँ प्रकाशो आ जोगियो दुनू भाँइ बाँहि पसारैत दादी-माँकेँ पुछलक-

“माए, तूँ केनए?”

गरमाएल साँस छोड़ैत दादी-माँ बजली-

“केम्हरो नहि, अपने दिस।”

शिवशंकरो आ दादियो-माँ, दुनू बेकती विचारए लगलैथ जे समय

एहेन दुरकाल बनि रहल अछि जे रातिक कोन बात जे दिनोमे सुरक्षित रहब कठिन भऽ गेल अछि, तैठाम घरेमे कुकुर-कटौज करत तँ जानत अपने। आब कि जीबैक कोनो लिलसा अछि, कमाइ छी खाइ छी।

❑

शब्द संख्या: 411

पटोटन

अद्राक पहिल बर्खा। मास्टर साहैब आ बड़ाबाबू एक्के मोटर साइकिलसँ दुनू गोरे गामसँ झंझारपुर जाइ छला। साते किलोमीटर झंझारपुर तँए दुनू गोरे गामेसँ जाइ अबै छैथ।

थानाक बड़ाबाबू नहि, कोर्टक बड़ाबाबू–देवनन्दन–आ हाइस्कूलक शिक्षक–प्रेमनन्दन। ओना, दुनू गोरे शहरुआसँ बेसी गमैये छैथ मुदा तैयो कलप कएल कपड़ा पहिर कऽ एबे-जेबे करै छैथ।

पँचकोशीमे सिंहेश्वरक नाओं एकटा नीक घरहटियाक रूपमे लोक जनैत। ओना, नाउएँ तँ नाओं छी, तइमे तँ कमी नै भेलैन अछि मुदा परदेसियाक कमाइ आ इन्दिरा आवासक चलैत काजमे कमी तँ भइये गेलैन अछि। उमेर बेसी भेने मनमे खुशीए होइत रहै छैन जे भने काज कमि रहल अछि। एक तँ परदेश भगने नव घरहटिया नै बनि रहल अछि, दोसर हमहीं सभ जे पुरना पाँच गोरे छी सएह केते सम्हारब।

ब्रह्मपुर गाममे प्रवेश करिते बुन्दाबुन्दी पानि शुरू भेल। बड़ाबाबू ड्राइवरी करैत आ मास्टर साहैब पाछूमे बैसल। बून तँ गोटगर पड़ैत रहै मुदा कम-सम। बित-डेढ़ बितक दूरीपर बून खसै तँए कपड़ा सोंखने चलि जाइत, मुदा जेते आगू बढ़ै छला तेते पानियोँ बेसियाएल जाइत। बढ़ैत-बढ़ैत सिंहेश्वरक घर लग अबिते अँटैक जाएब नीक बुझलैन। सड़केपर गाड़ी लगा दुनू गोरे सिंहेश्वरक दरबज्जा दिस बढ़ला। दरबज्जा कि मालक घर। आधा घरमे माल बन्हैत आ अदहामे दरबज्जा बनौने। दरबज्जा कि

एकटा चौकी मात्र। सिंहेश्वर अपने दरबज्जेपर। चारसँ चुबैत बूनकें निहारि-निहारि देखैत जे रौदमे फाटि गेल अछि आकि कौआ खोदने अछि। मुदा लगले मोन पड़ि गेलैन आद्रा आबि गेल, घर कहाँ छाड़लौं। तखने दुनू गोरे पहुँचला। चौकीपर सँ उठि सिंहेश्वर दुनू गोरेकें बाँहि पकैड़ चौकीपर बैसबैत अपनो बैसला। तरतरौआ बर्खा शुरू भेल। कलप कएल शर्टपर खढ़क चुबाटसँ दाग जकाँ हुअ लगलैन। एक तँ वेचारेकें अपने मनमे दुख होइत हेतैन जे केना साल खेपब तैपर सँ हमहूँ भारी बना दिऐन से उचित नहि। दागे लगत तँ की हेतै, कोनो कि केरा-दारीमक दाग छी जे नै छुटत। मुदा बड़ाबाबूकें मुहसँ बजा गेलैन-

"अहाँक नाओं पँचकोसीमे अछि सिंहेश्वर भाय, मुदा अपना घरक हालत एहेन बनौने छी?"

बड़ाबाबूक विचारसँ सहमत होइत सिंहेश्वर बाजल-

"बड़ाबाबू, गामसँ लोककें भगने गाममे काज बढ़ि गेल अछि, मुदा काजक धुनि तेहेन पकैड़ लेलक जे ठेकाने ने रहल जे बरसात आबि गेल। आब पानि छुटैए तँ नै छाड़ल हएत तँ पटोटनो तँ दइए देबइ।"

❑

शब्द संख्या: 350

मुसाइ पण्डित

मुसाइ पण्डित गाम भरिमे विख्यात छैथ। ओहन पण्डित जिनकर बात मुसाइए पण्डितक नाओंसँ विख्यात अछि। मध्यम् जातिक मुसाइ पण्डित, माइक कोरपच्छु बेटा भेने दौजी फड़ जकाँ तीन सालमे माए आ सात सालमे पिताक श्राद्ध केलैन। मुदा बाल-बिआहक शुभ फल भेट गेल रहैन। पिताक श्राद्धसँ तीन मास पहिने बिआह भऽ गेलैन। जँ कहीं तीन मास पछुऐतैथ तँ सिमरिया-गाड़ी जकाँ मास नै कऽ पबितैथ मुदा भाग्य तँ भाग्य छी, से मुसाइ पण्डितकेँ सुतरलैन। जेकरा माए-बाप रहै छै तेकरा तँ पोथी-पतरा काज दइते छै जे बिनु-माइयो-बापबलाकेँ सुतरल। मुसाइ पण्डित पिताक श्राद्धक तीन दिनक पछाइत ससुरकेँ अरियातै-काल पुछलखिन-

"बाबू, आब तँ यएह सभ ने माता-पिता भेला, हमर की हएत? भाए-भौजाइक हालत अपनो गाममे देखिते हेथिन।"

जमाइक प्रश्न सुनि कमलाकान्त गुम्म भऽ गेला। मने-मन विचारए लगला जे बेटी-जमाइक भार उठाएब भारी होइ छइ। फेर मन घुमलैन जे भगिनमान तँ कुलश्रेष्ठ होइए! मुदा लगले मन बदैल गेलैन धी-जमाए-भगिना...। जहिना घरमे सिदहा नै रहने भूखक लहैर जोर मारै छै तहिना आगूक जिनगी मुसाइकेँ जोर मारलकैन। दोहरबैत बजला- "बाबू, किछु बजलखिन नहि?"

कमलाकान्तक मन फेर बहटलैन। पत्नीसँ पुछि लेब जरूरी अछि

मुदा से खोलि कऽ केना समधियौरमे जमाए लग बाजब। बेटोकेँ तँ पुछि लेब अछि। मुदा पुतोहु बेरमे पुछबे ने केलौं आ बेटी-जमाए बेरमे किए पुछबै। मन बनिते बजला- “दुनू भाय-भौजाइकेँ बजबियौन। आखिर माता-पिताक परोछ भेने तँ वएह सभ ने माता-पिता भेला।”

मुसाइ दुनू भाँइकेँ पुछलैन। एक तँ औहुना लोकक घराड़ी घटल जाइ छै तैपर जँ बढ़ि जाए, ई के नै चाहत। दुनू भाँइयो आ भौजाइयो मुसाइकेँ सासुर जाइक आदेश दऽ देलक। गाए-नेरूक मिलान तँ ठेहुने-पानि दुहान।

कमलाकान्त संगे चलए कहि पुछलखिन- “कपड़ो-लत्ता लेब।”

मुसाइ बजला- “हँ, हँ, जेते सरधुआ कपड़ा अछि ओ जँ नै लऽ लेब तँ ऐठाम मूसे-दिवार खा जाएत।”

एक तँ ओहिना मुसाइ सहलोल, तैपर सासुरक विद्यालय पहुँच गेला। सासुरमे जँ सारि-सरहोजिसँ गलथोथरिमे हारि जाएब तँ कोन डोराडोरिबला भेलौं। जहिना विषुवत रेखाक समान दूरीपर दुनूमे दिशा समान मौसम होइत तहिना अन्हार-इजोतक बीच सेहो होइत अछि।

पच्चीस बर्खक अवस्थामे मुसाइ सासुरसँ ‘मुसाइ पण्डित’ भऽ दूटा धिया-पुता नेने गाम आबि गेला। जहिना फुटलो खपटाक जरूरत समय पाबि होइ छै तहिना मुसाइ पण्डितक जरूरत गाममे आइ भेल।

मौसमी बेमारीक जानकारी दइले गाममे बहरबैया सभ औता। जखनेसँ मुसाइ पण्डित सुनलैन तखनेसँ मटिया तेल देलहा कुत्ता जकाँ मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेलैन।

जहिना समय निर्धारित छल तहिना कार्यक्रम शुरू भेल। अभ्यागती सुआगत सभकेँ भेलैन। बारहो मासक मौसमी बेमारी आ ओइसँ पथ-परहेजक नीक जानकारी देलखिन। गाममे नव फल भेटल। बीचमे बैसल मुसाइ पण्डित सुनैपर कम धियान देने रहैथ। संगसोरमे जहिना लोक

हरेलहो जगहपर गपे-गपमे पहुँच जाइत तहिना मुसाइयो पण्डित पहुँच गेला। हरलैन ने फुरलैन उठि कऽ बीचमे ठाढ़ भऽ गेला। ठाढ़ होइते बैसलाहा सबहक आँखि पड़ए लगलैन। दुनू हाथसँ शान्ति बना रखैक इशारा दैत मुसाइ बजला-

"अभ्यागत लोकैनक विचार उत्तम अछि, सभकेँ अनुकरण करक चाहिऐन।"

अपन समर्थन पाबि बाहरी लोकैन आरो ऐगला बात सुनैले जिज्ञासासँ कान ठाढ़ केलैन। मुदा जे पहिने बाजत ओ चोर, गाम-घरक खेलक मंत्र छइ। तँए आँखि, कान तँ मुसाइ पण्डित दिस सभ देलैन मुदा मुँह घुमौनहि रहला। मुसाइ पण्डित-ले धैनसन। कहिया लोक हमर बात सुनलक आ देखलक। सुनह आकि नै सुनह, मनक उदगार छी, बजबे करब। मुदा साइयो आँखि भीष्म–पितामह जकाँ गड़ल देखि सम्हरैत मुसाइ पण्डित बजला-

"आम-जामुन इलाकाक हाड़-पाँजर टुटब, किसानी काजमे साँप-कीड़ा काटब, हाड़मे पैसल जाड़केँ सेहो तँ देखए पड़त, ईहो तँ मौसमीए बेमारी भेल किने?"

गौंआँ वक्ता बुझि जोरसँ सभ थोपड़ी बजौलक मुदा थोपड़ी सुनि मुसाइ पण्डित अकबकमे पड़ि गेला जे लोकक थोपड़ीक आवाज की छइ। हास हँसी आकि हँसी हास।

❑

शब्द संख्या: 568

भरमे-सरम

बच्चामे बाबू केतबो पढ़बैक परियास केलैन मुदा हम नहियेँ पढ़लयैन। अपनेसँ जे कनैठी दऽ नाम-गाम सिखा देलैन ओ अखनो कानेपर रखने छी।

पचासम बर्ख चलि रहल अछि। पौरुसाल शिक्षामित्रक उजैहिया उठल। चौक-चौराहा, हाट-बजार, गल्ली-कुच्ची सगतैर एक्के हवा बहए लगलै। जहिना हवा पीब अधमरुओ साँप फनफना उठैत तहिना मनमे उठल। उठिते गर अँटबए लगलौं। एहेन बहैत गंगामे स्नान नै कऽ लेब तँ सभ दिन पापीए रहि जाएब। दरबज्जापर बैसल विचारिते रही आकि सुन्दर भायकेँ धड़फड़ाएल अबैत देखलयैन। हुनका देखिते अपन चिंता पड़ा गेल। दया उमैड़ आएल। वेचारे एक्को कौड़ीक आदमी नइ रहला। आचार्यक उपाधि लैयो कऽ गोबर-माटि भेल पड़ल छैथ। नोकरी नै भेलैन। लग अबिते पुछलयैन-

"भाय, केमहर-केमहर?"

चौअन्नियाँ मुस्की दैत बजला-

"बेतरनी पार होइक लग्न आबि रहल अछि। डारि चुकल बानरक जे गति होइ छै वएह गति अवसर चुकल मनुक्खोकेँ होइ छै, तँए गंगामे हाथ धोइ लिअ।"

धारक मोइन जकाँ विचार चकभौर लेलक। पुछलयैन- "से की?"

कहलैन- "ऐगला साल तेते शिक्षा मित्रक बहाली हएत जे एक्कोटा

पढ़ल-लिखल नै बँचत।”

असमंजसमे कहलयैन-

“भाय, हमरा तँ नामे-गामटा लिखल होइए।”

ठाहाका मारि सुन्दर भाय कहलैन-

“डेर-दू हजार खर्च करू, तेहेन सर्टिफिकेट आनि कऽ देब जे पहिलुके बहालीमे भऽ जाएत।”

रुपैआ दऽ देलिऐन सर्टिफिकेट आनि देलैन। भैकेन्सी भेल।

बेटो बी.ए. पास केने अछि। दुनू बापूत गामेक स्कूलमे दरखास दइक विचार केलौं...। कागतक जखन मिलानी केलौं तँ बेटाक उमेरसँ दू बरख कम अपन उमेर! मुदा एहेन अजोध बात बजबो केतए करब। भरमे-सरम चुप्पे रहि गेलौं।

❑

शब्द संख्या: 233

देखल दिन

मृत्युसँ छह मास पूर्व मुनेसर काकाकेँ बेटा लग मन उबियेलैन तँ असगरे दिल्लीसँ गाम विदा भेला। परिवारसँ समाज धरि सभकेँ अचरज लगलै जे मुनेसरकेँ मनमे की चढ़ि गेलैन जे असगरे एते साहस केलाह..!

मुनेसरकेँ असगरे विदा होइक कारण भेलैन जे बेटाकेँ पाँच दिन समय नहि, एक तँ औहुना बैंकमे कम छुट्टी होइ छै तैपर अपनो कारोबार ठाढ़ केने अछि। पुतोहु सहजे पुतोहुए छथिन, भरि दिन एअर-कंडीशनमे बैस देश-विदेशक खेल देखब आ साज-सिंगार छोड़ि दुनियाँमे किछु देखबे ने करै छैथ। मुदा मुनेसर कक्काक साहसक कारण ईहो भेलैन जे एकेटा गाड़ी दिल्लीसँ सकरी पहुँचा देतैन। सकरी तँ औहुना घरे-अँगना भेलैन।

गाम अबिते मुनेसर काका देखलैन जे घर-अँगना तँ खण्डहर भऽ गेल, केतए रहब। अन्डी-बगहन्डी, भाँग-धथुरसँ भरल अछि। जखने बोनाह भेल तखने साँप-छुछुनैरक संग बिढ़नी-पचैहिया हेबे करत। बाप-पुरुखाक डीहक दशा देखि दुख भेलैन जे जखन घरे नै तखन मनुक्ख केना रहत। जखन मनुक्खे नइ रहत तँ बाप-पुरुखाकेँ के चिन्हत..? मने-मन विचार ऊपर-निच्चाँ होइते रहैन कि एक गोरेकेँ रस्ता धेने जाइत देखलखिन। ओना, दस साल पहिनौं देखनै रहैथ मुदा मनुक्खोक बुनाबट तँ अजीव अछि। जहिना बीस बर्खक अवस्था धरि बाढ़िक आगमन रहैए तहिना साठि बर्खक पछाइत रौदियाहक। दुनू सएह तँए पुछैक जरूरत

दुनूकेँ भेलैन। कमलेशकेँ अइले पुछैक जरूरत भेलै जे आन-गामक जँ रहितैथ तँ रस्ते-रस्ते एला, चलि जैतैथ। ठाढ़ भऽ निहारि किए रहला अछि। जखन कि मुनेसर काकाकेँ जरूरी भेलैन जे जखन पुश्तैनी गाम एलौं, परिवार चलि गेल तँ चलि गेल, समाज तँ अछि आकि ओहो मेटा गेल। मोबाइल जकाँ नहि, जे अगुआ कऽ किए फोन करब, पाइयो खर्चा होइ छै! बल्कि ओइ सम्प्रदाय सदृश अछि किने जे अगुआ कऽ जेकर नजैर पड़त ओ पहिने अभिवादन करत। मुदा भेल दोसरे, जहिना पनचैतीमे एक संग अनेको बजनिहार बाजए लगैत वा मोबाइलेपर दुनू दिससँ दुनू परानी बाजए लगैत, तहिना मुनेसरो काका आ कमलेशो एक्के-बेर दुनू दिससँ बजला। आग्रह करैत कमलेश अपना ऐठाम तीन दिनक अभ्यागतीमे मुनेसर काकाकेँ लऽ गेलैन।

गाम-समाजक कुशल-समाचारक संग मुनेसर कक्काक मनक जड़िमे अपन परिवार नाचए लगलैन। कोन धरानी बाबू, एकटा साधारण पोस्ट मास्टर रहि तीस बीघा खेत बनौलैन। दस गामक बीच एकटा पोस्ट ऑफिस। मनिऑडरक रुपैआ अगुआ-पछुआ, संग-संग जिनकर रुपैआ दिअ जाथि दू-चारिअना ओहो देबे करैन। आमदनी बढ़ने पढ़ा-लिखा हाकिम बना देलैन। अखन तेसर पीढ़ी चलि रहल छैन। ..डण्डी तराजू जकाँ मुनेसर परिवारकेँ तौल रहल छैथ जे एक पीढ़ी, पिताक पीढ़ी समाजमे की सभ केलैन? बीचक की भेल आ आइ उजैर-उपैट गेल। जहिना चढ़ैत जुआनीक जिनगी बौड़ा जाइ छै तहिना ने अबैत मृत्युकेँ रोग-सोग सेहो भेटए लगै छइ।

कमलेशक घर देखि मुनेसर काका चिन्ह गेला जे ई तँ संगीए-क घर छी! पुछलखिन-

“बाउ, परिवारमे के सभ छैथ?”

कमलेश बाजल-

“तीन पीढ़ीक सभ छैथ।”

मुनेसर काकाकेँ आगू बकार नइ फुटलैन। जहिना तकितो आँखिमे ज्योति नै रहै छै तहिना मुनेसर कक्काक स्थिति भऽ गेलैन।

❑

शब्द संरव्या: 441

फज्झैत

सोनेलाल आ जीयालालक बीच करीब बीस बर्खसँ चिन्हा-परिचए छैन। ओना, दू गामक छैथ मुदा सटल गाम रहने खेतो एकबधू आ हाटो-बजारमे भेँट-घाँट होइते रहै छैन। कहैले दुनूक बीच अपेछो छैन, एकबधू खेत रहने अड़ियो छैथे मुदा दुनू गामक विपरीत सामाजिक चालि-ढालि रहने बात-विचारमे अन्तरो छैन्हे।

कामेकेँ धाम आ कर्मेकेँ धर्मक विचार रहने जीयालाल कम आँट-पेटक सम्पैत रहनौं ने कहियो बेकारी महसूस करै छैथ आ ने गुजर-बसर करैमे परेशानी होइ छैन। जहिना मौसमी फल बरह-मसियो होइत अछि तहिना मौसमी खेतीकेँ बरह-मसिया दिस ससारैमे दिन-राति लगल रहै छैथ। जखन कि सोनेलाल सोल्हैनी मौसमी किसान छैथ।

अन्नक खेतीक संग जीयालाल फलो-फलहरी आ तरकारियो-फड़कारीक खेती करै छैथ। खेतक हिसाबसँ अपने भरि खेती करै छैथ मुदा मेहनत बेसिया दइ छैन जइसँ अदहा-छिदहा बिक्री-बट्टा सेहो भइये जाइ छैन। जइसँ आनो-आनो काज चलिते रहै छैन। फलक खेती केने लताम, नेबो, धात्री, अनारसक गाछ नर्सरी जकाँ रहिते रहै छैन। मुदा जहिना धर्मक जड़ि 'दया' छी तहिना खेतीक जड़ि 'बीआ' सेहो छी, तँए फलक कोनो गाछ बेचै नइ छैथ। ओहिना–मंगनीए–दोसरकेँ दइ छथिन।

नेबोक एकटा गाछ जीयालालसँ सोनेलाल मंगलकैन। रस्ते-पेरेक

गप छल। जीयालाल कहलखिन-

"जखन आएब भऽ जाएत।"

साल बीत गेल। ओना, दुनू गोरेक बीच भेँट-घाँट होइते रहै छेलैन मुदा गाछक कोनो चर्च नहि।

दोसर साल दुनू गोरेकेँ नवानीक दुर्गा-पूजा-मेलामे भेँट भेलैन। चाहे दोकानपर बैस दुनू गोरेक बीच दुनियाँ-दारीक संग अपनो खेती-पथारीक गप चललैन। जेना हराएल वस्तु भेटने देहमे पानि जगै छै तहिना सोनेलालकेँ जगलैन। दोकानपर चारि-पाँच गामक चारि-पाँच गोरे बैसल छला। सोनेलाल जीयालालकेँ कहलखिन-

"हमर बाँकीए अछि?"

'बाँकी' सुनि जीयालालोकेँ धक-दे नेबो गाछ मोन पड़लैन। सुहकारैत कहलखिन-

"हँ, हँ, से तँ अछिए। भऽ जाएत।"

तेसर साल, विजलीपुरमे समैधक ऐठाम दरबज्जापर सोनेलाल बैसल रहैथ तखने मधेपुरसँ अबैत जीयालालपर नजैर पड़िते सोर पाड़लखिन। समाजो आ परिवारोक पान-सात गोरे बैसल रहैथ। सोनेलालक आवाज सुनि जीयालाल सड़कसँ पच्छिम मुहेँ साइकिलो घुमौलैन आ विचारियो लेलैन जे फज्झैत करबैन। तइसँ पहिने मनमे उठि गेल रहैन जे जखन दुइए गोरेक बीचक काज छी तखन दुनियाँकेँ जनबैक कोन जरूरत। जरूर किछु बात छै तँए फज्झैतसँ जड़ि पकड़त। दलानक दावामे जीयालाल साइकिल लगैबते रहैथ कि सोनेलाल महाजनीक स्वरमे बजला-

"हमर बाँकीए अछि!"

सोनेलालक स्वरो आ जगहो देखि जीयालालक देह अगिया गेलैन।

एक तँ औहुना पुरुखक आदत रहल अछि जे घरोवाली लग आ सासुरो-समधियौरोमे अलंकारिक भाषाक प्रयोग करैए। ..नजैर तेज करैत जीयालाल, लूरिगर सिपाही जकाँ जे दुश्मनेक हाथक हथियार छीनि प्रहार करैए, तहिना समाजकेँ अगुअबैत बजला-

"अहूँ सभ अपन समधिक हाल सुनू। बेटा-पुतोहु, बेटी-जमाएबला भऽ गेला, मुदा अखन धरि एकटा नेबौओक गाछ नै छैन!"

❑

शब्द संख्या: 401

अकास दीप

दिवालीक एक दिन पहिने गाममे रंग-बिरंगक अकासदीपक खुट्टा गड़ल देखि मनोहरोक मनमे उठलै जे अपनो ऐठाम जराबी मुदा लगले मन घेरा गेलै जे पाबैन-तिहार तँ परम्पराक हिसाबे चलैए, जँ से नइ तँ एके समाज माने एक जातिक समाजमे एकेटा पाबैन किछु गोरेकेँ होइ छैन आ किछु गोरेकेँ नहियोँ होइ छैन। कारणो स्पष्ट अछि जे जाति दियादमे बँटल अछि। जँ दियादीक भीतर पाबैनक दिन अशौच भऽ जाइए तखन टुटि जाइए। किछु गोरे खण्डित बुझि जोड़ि लइ छैथ, किछु गोरे छोड़ि दइ छैथ। तैसंग ईहो होइत रहै छै जे बहरबैया आमदनीपर जिनका नहियोँ होइ छेलैन ओहो नव शिरासँ शुरूहो करै छैथ। ओझराइत मनोहर, बाबासँ पुछैक विचार केलक।

मनोहर हाइ स्कूलमे पढ़ैए। घरक कोनो काज करैसँ पहिने बाबासँ पूछब जरूरी बुझलक।

सात बजे साँझ। चाह पीब पान खाइते श्यामलाल गप करैक मूडमे एला। केकरो नै देखि चौक दिस जाइक विचार करिते रहैथ आकि मनोहर आबि पुछलकैन-

“बाबा, एकटा विचार मनमे भेल?” “की?”

“ऐ बेर अपना गाममे साइयोसँ बेसी अकास दीप दिवाली दिन बरत!”

“ई तँ नीक बात भेल।”

श्यामलालकेँ अनुकूल होइत देखि मनोहर बाजल-

“बाबा, अपनो दरबज्जापर..?”

श्यामलाल मुड़ी डोलबैत सोचए लगला- मनोहर बच्चा अछि हलहोरिमे मन उड़ि गेलइ। काँच कड़ची वा पघिलल काचकेँ जेहेन साँचामे देल जाइ छै तेहने ने वस्तुओ बनै छइ। सोचि श्यामलाल कहलखिन-

“बौआ, जइ गाममे मटिया तेल, जेकर उपयोग गाममे खाली डिबिए-टामे होइ छै, तहूक हाहाकार मचल रहै छइ। तैठाम तूँ भरि राति मासो दिन डिबिया बारबह से केहेन हएत?”

❑

शब्द संख्या: 235

बुधि-बधिया

रामकिसुन आ देवनारायण लंगौटिया संगी। एकठाम बैस खेती-पथारीसँ लऽ कऽ कुटुम-परिवार सहितक गप-सप्प दुनू करैत। रामकिसुनक बेटा दरभंगासँ धड़फड़ाएल आबि कहलकैन-

“बाबू, रुपैआक ओरियान कऽ दिअ। काल्हिए भरि फार्म भरैक समय छइ।”

अपना हाथमे रामकिसुनकेँ पनरहे साए रुपैआ, पाँच साए ओरियान करब छेलैन। जैठाम लोक बेसी गप-सप्प करैए तैठाम घरक नूनो-तेल आ खेतक खरीदो-बिकरीक गप सेहो करिते अछि। मनमे भेलैन जे पैंचेक गप अछि तँ अनका किए कहबैन। पहिने दोसेकेँ कहै छिऐन, जँ नै हएत तखन बुझल जेतैक। कोनो कि पैंच-उघारक अकाल पड़ि गेल अछि जे नै भेटत। यएह तँ गुण अछि जे जेते खगल दुबराइये, महाजन ओते मोटाइये।

देवनारायणकेँ रामकिसुन कहलखिन-

“दोस, पान साए रुपैआक बेगरता भऽ गेल अछि, सम्हारि दिअ।”

देवनारायणक हाथमे रुपैआ रहबे करैन, मुदा दोससँ सूदि केना लैतैथ। महाजनी सूदिक गुण तँ बुझल छेलैन। कनी-मनी झूठ-फूस धन-सम्पैतक लेन-देनमे चलिते अछि। सुहरदे मुहेँ उत्तर देलखिन-

“दोस, जखन अपना बुझि हमरा लग एलौं तँ घुमाएब उचित नै हएत, मुदा इमानदारीसँ कहै छी अपना हाथमे एको पाइ नइ अछि।”

रामकिसुन बजला-

“तब तँ काजमे बाधा हएत!”

तैपर देवनारायण कहलकैन-

“से नइ हुअए देब?”

रामकिसुन-

“कहै छी हाथ खालीए अछि तखन बिथुत केना नै हएत?”

देवनारायण-

“अपन ने खाली अछि, हुनकर (पत्नीक) हाथमे छैन। मुदा..?”

रामकिसुन पुछलखिन-

“मुदा की?”

देवनारायण-

“आना दर सूदि तँ महाजनीमे चलै छै मुदा स्त्रीगणकेँ तँ माइक देलहा कोसलिया रहै छै किने, तँए दू-अना दर सूदि लागत।”

‘सूदि’ सुनि रामकिसुन गुम भऽ गेला। मनमे उठलैन जे सोझ हाथे नाक नै छुबि घुमा कऽ छुअब भेल। जेते घुमौन बाट रहै छै तेते ने लोको हराइये। मुदा काज खगौने तँ जिनगी खसै छइ। यएह ने परीक्षोक घड़ी छी।

❑

शब्द संख्या: 267

पहाड़क बेथा

सौनक फुहार पड़िते जहिना नरम-गरमक बीच गप-सप्प शुरू होइत तहिना धाराक संग निकलैत पहाड़ समुद्र दिस बढ़ल तँ कबइ माछ जकाँ समुद्रो सिरा ससैर पहाड़ दिस बढ़ल। जहिना अकासक बून पबिते पानि रंग जकाँ चुहैट धड़ैए तहिना दुनूक बीच भेल। पनचैतीक ओइ पंच जकाँ जे अपन बेथा कहए जाइत आ अनके तेते बेथा रहैत जे अपन तर पड़ि जाइत, तहिना समुद्रोकेँ भेल। ओना, अपन-अपन बेथा दुनूकेँ रहै मुदा सिर चढ़ल पहाड़ रहने समुद्र चुपे रहल। मनमे संतोष भेलै जे जिनगीए केहेन छैन तँए बेथे केते हेतैन। कनी पाछुए अपन बेथा राखब। खिलैत कोढ़ी जकाँ, जे फूल बनत आकि फल, बिहुँसैत समुद्र पुछलक-

"भाय, बड़ तबधल देखै छी! पियास लगल अछि की?"

जहिना पियासल बटोहीकेँ कोनो दरबज्जापर पानिक लोटा सोझहा अबिते आत्माक तरास लपैक कऽ पकैड़ लैत तहिना पहाड़ बेथित भऽ बाजल-

"देखू जे सात बितक केहेन अछि जे एक तँ अदहासँ बेसी फटले छै तैपर केहेन ठट्ठा केलक हेन!"

बेथामे नहाएल पहाड़केँ देखि समुद्र पुचकारि कऽ पुछलक-

"भैया, अहूँ जँ बेथा-जेबइ तँ हमरा सबहक की गति हेतइ। अहींक आशामे ने हमहूँ जीबै छी।"

रसाएल समुद्रकेँ देखि क्षुब्ध होइत पहाड़ बाजल-

“कहू जे एहनो ठट्ठा होइ छै जे टिकमे बान्हि देने अछि, खुनलौं पहाड़ निकलल चुहिया। यएह निसाफ होइ जे मेडिकलक किताब पढ़निहारकेँ जँ कियो कहै जे अहाँकेँ सरदियो छोड़बैक लूरि नै अछि, ई केहेन हएत।”

❑

शब्द संख्या: 216

उमकी

भोलन बाबा गंगा नहाइले निरधनमाक संग गेला। गंगामे दुनू गोरे संगे पैसला, ऐ आशासँ जे जँ बुढ़–भोलन बाबा–भँसियेता तँ पोता निरधनमा पकड़तैन आ जँ बाल-बोध निरधनमा भँसियाएत तँ भोलन बाबा पकड़तैन। जाधैर दुनू गोरे पकड़ा-पकड़ी नै करितैथ ताधैर एक कालखण्ड-भरि संगे केना रहि पबितैथ।

गंगामे पैस निरधनमा पुछलकैन-

“अँए हौ बाबा, सभ चीजक गाछमे देखै छिऐ सभटा एक-रंग रहल आ गोटे-गोटे भुलैक जाइए?”

निरधनमाक प्रश्नसँ बाबाकेँ दुख नै भेलैन जे हमरे ठीकिया कऽ ने तँ पुछलक। मुदा हमरा ठिकिया कऽ बाल-बोध किए पुछत। जहिना जेठुआ पानि पीबते धरती पुरना खढ़केँ गलेबो करैए आ नवकाकेँ जनमेबो करैए तहिना तँ अखन निरधनमो अछि...।

ताधैर दुनू गोरे छाती भरि पानिमे पहुँच गेला। छाती भरि पानिमे पहुँचते जेना सर्द माथ धरि पहुँच गेलैन। सर्द पहुँचते निरधनमा दोहरा कऽ पुछलकैन-

“बाबा, जखन छाती भरि पानिमे आबिए गेलौं तँ अहीले ने लोक एते हरान रहैए, आब घुमि कऽ कथीले जाएब, से नइ तँ..?”

निरधनमाक प्रश्न सुनि भोलन बाबा हरा गेला। पानिमे जेना डुमि गेला। मनमे उठलैन जे अही उमेरमे ने बाल-बोध पानिमे नहाइले जाइत

तँ उमकए लगैत। कहीं अही उमकीमे ने निरधनमा बेसी पानिमे पहुँच भँसि जाए! जँ भँसि गेल तँ फेर एहेन लोक भेटत कि नहि! ..मन रोकलकैन, पहिने मुहसँ मनाही कऽ दइ छिऐ। नइ मानत तँ अपने ने गंगा लाभ हएत। मुदा बुढ़ाड़ीक बाट तँ अपनो टुटि जाएत। ओकरा छोड़ि एक लोटा पानियोँ देनिहार थोड़े भेटत, तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल अछि जे... । जैठाम ताड़ी-दारूक लाइसेंस दऽ दऽ बेरोजगारी हटौल जाइए। की ऐ रोजगारसँ मिथिलाक माटि जे बाउलसँ भरि बलुआ गेल अछि–ओ उपजाऊ भूमि बनत? जाधैर नै बनत ताधैर हम सभ ओहिना बरहमासाकेँ छहमासा बनाएब आ छहमासा चौमासा तीनमासा करैत पराती-साँझ कानि-कानि गाएब, 'माधव, हम परिणाम निराशा..!'

डुमकी लइसँ पहिने बाबा निरधनमापर नजैर देलैन तँ देखलखिन जे ओ हमरे बाट ताकि रहल अछि। बजला-

"एक्के बेर डूम लिहेँ। सभ तीरथ बेर-बेर गंगासागर एकबेर।"

जहिना कियो दोस्ती करैकाल गंगाक सप्पत लैत, तहिना संगे दुनू गोरे गंगामे डूम लैत स्नान कऽ घुमि गाम एला।

❑

शब्द संख्या: 321

बजन्ता-बुझन्ता

पोखैरक धड़िक विशाल सिमरक गाछपर दूटा सुग्गा बैस, जतिआरए सम्बन्ध बनबैत रहए। मुदा नाम-गामक ठेकान बिनु बुझने उड़ैबलाक कोन ठेकान। तँए दुनू सहमत भेल जे पहिने अपन ठौर-ठेकानक सम्बन्ध बना लिअ तखन कथा-कुटुमैतीक सम्बन्धक चर्च करब। दोसर डारिक सुगा लग पहुँच गेल। दुनू बुझैत जे घर-परिवारक गप आन किए सुनत, तँए कानमे कान सटा पहिल सुग्गा दोसरकेँ पुछलक-

"बेरादर, तोहर नाओं की छिअ?"

कनी-काल गुम रहि ओ कहलकै-

"उढ़ड़ाकेँ गामक ठेकान होइ छइ! की नाओं कहबह। तोहीं अपना विचारे रखि दएह। हमहूँ आइसँ मानि लेब।"

पहिल सुग्गा बाजल-

"बड़बढ़ियाँ।"

'बड़बढ़ियाँ' सुनि दोसर धाँइ-दे पुछलकै-

"भाय, तोहर नाओं की छिअ?"

पहिल कहलकै-

"पोसा।"

दोसर सुग्गा पुछलकै-

“पोसा केकरा कहै छइ?”

‘पोसा’ जवाब देलकै-

“जे मनुक्खक संग रहैए।”

अकचकाइत पुछलकै-

“तब तँ पिजरामे रखैत हेतह?”

पोसा कहलकै-

“हँ, पिजरोमे रहै छइ। मुदा हम ओहन पोसा छी जे बिनु पिजरेक मनुक्खक संग रहै छी।”

❑

शब्द संख्या: 147

चर्मरोग

एक तँ कातिकक पूर्णिमा दोसर गहन सेहो लगत। तहूमे केते सालक पछाइत पूर्ण-ग्रहन लगि रहल अछि। गामक लोकक उजाहि देखि दुनू परानी दोस काका सेहो कमला नहाइक विचार केलैन। तीनिए दिन जाइ-अबैमे लगतैन।

दोस काका काकीकेँ कहलखिन-

“जखन तीनिए दिनक बात अछि तखन किए ने घरेसँ बटखर्चा लऽ जाइ। अनेरे केहेन-कहाँ दोकानक खाएब। एक तँ बेचनिहारक हाथ-पएर नीक नै रहै छै, तहूमे कोन-कहाँ माछी सेहो भिनकैत रहै छइ।”

दोस कक्काक विचारमे अपन विचार मिलबैत काकी उत्तर देलखिन- “अपन घर फेर अपन घर छी। कौओ-मेना अपन घरक सुख बुझैए। हम सभ तँ सहजे मनुक्ख छी। एतबो-अचार विचार नै रखब से केहेन हएत। तहूमे तेते ने चीज-वौस महग भऽ गेल अछि जे लोक आब भरि पेट खाइए आकि मनकेँ बुझा पानिसँ पेट भरैए।”

मुड़ी डोलबैत दोस काका कहलखिन-

“काल्हि चारि बजे भोरमे गाड़ी अछि। घन्टा भरि टीशन जाइमे लगत। एक-डेढ़ बजेमे सभ कियो उठि जाएब आ जाबे दुनू पुतोहु बटखर्चा बनौती ताबे दुनू गोरे नहा-सोना लेब।”

काकी बजली- “बड़बढ़ियाँ।”

कमला स्नान करैक विचार, तँए दुनू परानी अबेर तक गपे-सपमे

जागि गेलैथ। अबेर-के सुतने नीनो अबेर तक खिहारलकैन। एक-डेढ़ बजेक बदला अढ़ाइ बजेमे नीन टुटलैन। घड़ी देखिते दोस काका अपन दोख घुसकबैत पत्नीपर गुम्हरला- “अढ़ाइ बजैए, आब करवन चुल्हि पजारल जाएत। तहूमे सभ सुतले अछि!”

दोस काका दिस अपन क्रोध नै घुसका काकी पुतोहुपर जोरसँ गरजली- “कोन कुम्हकर्णक बेटी सभ घर चलि आएल से नहि जाइन। कहू जे एना कऽ सिखा कऽ दुनू दियादिनीकेँ कहने छेलिऐ जे एक-डेढ़ बजेमे उठि चुल्हि पजारि बटखर्चा बना देब, से चलचलउ बेर तक सुतले अछि!”

मुदा पुतोहु-ले धैनसन। सुतलमे गाइरिये की, जे सुनबे ने करत। पुतोहुक चाल-चुल नइ सुनि काकी अपने ठंढा गेली आगू बढ़ि जेठकी पुतोहुकेँ सोर पाड़ि बजली- “एना कऽ कहने छेलौं, से अखन तक सुतले छी?”

भलेँ कातिक मास रोगाह किए ने हुअए मुदा जेठक राति ओहन सोहनगर थोड़े होइए, जेहेन सिनेह-सुख कातिकक निनियाँ देवीक होइए ओ जेठजनीकेँ थोड़े होइ छैन। धानसँ भरल बसुधा जहिना कड़कड़ाइत रहैए तहिना ने देवियो कड़कड़ाइत रहै छैथ। ..ओछाइनेपर सँ जेठकी पुतोहु भकुआएले जवाब देलखिन- “अखन बड़ राति छै, एते किए औगताइ छैथ!”

एक तँ औहुना पैंतालीस-पचास बर्खक उमेर दुनू परानी-दोस कक्काक, तैपर सँ पुतोहुक बात आरो ढील कऽ देलकैन। मुदा तैयो गारजनी रूआब झाड़ैत काकी छोटकी पुतोहुकेँ उठबैत बजली- “कनियाँ, नइ खाइक ओरियान केलौं तँ नै केलौं, मुदा निकलबो बेर तँ अपन घर-दुआर सुमैझ लेब आकि सुतले रहब?”

पहिलुका बात छोटकी सुतलेमे गमौलैन। मुदा अन्तिम ‘सुतले रहब’

बेर नीन टुटि गेलैन। ओछाइनेपर सँ बजली- “दीदी, सुतले छथिन?”

रातिक भुखल भोरमे जहिना छह-नम्बरा कोदारि कान्हपर लऽ खढ़होरि तामए विदा होइत तहिना खिसियाएल मने दोस काका तीन दिनक धर्मक घाट पहुँचबाक विचार जगबैत काकीकेँ कहलखिन- “पनरहे मिनट समय बँचल अछि, झब-दे तैयार होउ, नइ तँ जहिना बटखर्चा छुटल तहिना संगियो आ कमलो स्नान छूटत।”

एक तँ ओहिना जेठुआ रौदमे सुखाएल केराउ, तैपर खापैरमे पड़िते जहिना भड़भड़ा कऽ उड़ए लगैत तहिना काकी भड़भड़ाइत दोस काकाकेँ कहलखिन- “आन पुरुखक जे बोल राखब से निमहत। कियो अपना घरमे पुतोहुओ अनलक आ दान-दहेज लछमियो अनलक। कियो तेहेन लूरिगर पुतोहु अनलक जेकरा देहेमे सभ किछु तेहेन छै जे परिवारकेँ शिखरपर पहुँचबैए! आ अहाँकेँ आँखिमे कोन चर्मरोग भऽ गेल अछि जे चूनि-चूनि पुतोहु अनलौं!”

पत्नीक बात सुनि दोस काका सहैम गेला मुदा सासुर, समधियौर आ पत्नी लग जँ मुँह बन्न भऽ गेल तँ पुरुखे कथीक। मुदा एको डारिक पत्ता धरिक बोध तँ पत्नीकेँ हेबे करै छैन जे करनी-धरनीक सीखमे सीखिते छैथ। मुदा तैयो दोस काका अगुअबैत बजला- “जाएब की नहि?”

लपैक कऽ काकी बजली- “ढौआ जेबीमे लऽ लिअ आ झनझनबैत चलू..!”

❑

शब्द संख्या: 571

शंका

चालीस बर्खसँ संग-संग रहनौं श्याम काकाकेँ काकीपर अखनो शंका बनले रहै छैन। ओना, सोल्हैनी शंका नहि, मुदा तैयो शंका तँ शंके छी। सोल्हैनी अइले नइ जे परिवारक आन काजमे एको पाइ शंका नइ रहै छैन, मुदा पाइ-कौड़ी खर्चक भाँजमे तँ रहिते छैन। जइसँ आइ धरि कहियो मुट्ठी खोलि नइ धरबै छथिन।

जाधैर श्याम कक्काक माए जीबैत रहथिन ताधैर पुतोहुक हाथमे कहियो जरूरीसँ बेसी कोनो वस्तु नइ जाए देलखिन। कारण छल जे अपने जकाँ कुशल गृहिणी बनबए चाहै छेली। कुशल अइले जे कम-सँ-कम वस्तुमे जीवन-यापन करैक लूरि भेलासँ जिनगीक गाड़ी समुचित ढंगसँ चलैए से चलैत रहैन।

आब तँ सहजे नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ घर भरि गेल छैन, मुदा तखन शंका किए छैन? ओना, ओ बुझै छैथ जे घरसँ बाहर धरि जोड़ि चलैक लूरि जेकरा होइ ओ कुशल गारजन भेल, मुदा से काकीकेँ रहितो किछु विशेष सिनेह नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ रहने अवगुण तँ छैन्हे। ओना, श्याम काकाकेँ अपन इच्छा कहियो दोकान-दौरीसँ नोन-तेल करैक नै रहलैन, आब तँ सहजे नहियेँ छैन। तँए काकीए दोकान-दौरी, नोन-तेल करै छथिन। दोकान-दौरीक करैक पाछू दोसरो कारण छैन। ओ ई छैन जे कनियाँ-पुतराक की मांग हेतैन से हुनका लग तँ बाजि सकै छैथ, मुदा श्याम काका लग थोड़े बजती।

काकियो कम नइ ने छथिन, दोकानक सभ समान कहि पाइ जोड़ि कऽ लऽ लइ छथिन आ तहूपर सँ किछु उधारी केने अबै छथिन। उधारीक कारण होइ छैन जे काजक वस्तु कहि पुतोहु चलबाकाल कहि दइ छथिन जे चौकलेट, नवका विस्कुट दोकानमे बड़ सुन्नर एलैए। पुतोहुक आग्रह केना काकी नइ मानथिन। जइसँ किछु ने किछु उधारी दोकानक भइये जाइ छैन।

तगेदा भेलापर श्याम काका बुझबे करै छैथ आ देबे करै छथिन। मुदा मनमे कुवाथ तँ भइये जाइ छैन जे एते धिया-पुताकेँ चसकाएब नीक नहि।

भोरे की फुरलैन कि नहि, उपराग दैत काकी श्याम काकाकेँ कहलखिन-

"एते दिनसँ एकठाँ रहलौं, मुदा भरि मन बिसवास कहियो ने भेल?"

काकीक बातकेँ गौर करैत श्याम काका पुछलखिन-

"से की, से केना..?"

श्याम काकाकेँ आगू बजैले रहबे करैन कि बिच्चेमे काकी टपैक पड़ली-

"मुट्ठी खोलि मुट्ठा कहियो मुट्ठीमे आबए देलौं?"

❑

शब्द संख्या: 325

ओसार

नोकरीक बीस बर्खक पछाइत वसन्त भाय दू मंजिला घर बनौलैन। दू मंजिला बनबैक कारण छोट घराड़ी। कोठरी मात्र चारिये-टा।

सभ परानी मिलि वसन्त भाय घरवासो लेता आ परदेशो छोड़ता। रहैक घर आ जीबैक अपन अनुकूल कारोबारक कमाइ कमा अनने छैथ। आठ बजे राति घरवासक समय छैन।

घरवासक सभ ओरियान जुटा एकठाम सभ जुटि गप-सप्प शुरू केलैन। आइ दोसर गपे की हएत। वसन्त भाय माएकेँ कहलखिन-

"माए, परिवारमे आब पोता-पोती धरि भऽ गेलौ। सभसँ सिरगर परिवारमे तोंही छेँ, बाज कोन कोठरी लेमेँ?"

एक तँ ओहिना माइक मन उधियाएल जे जेते दिनुका दुख लिखल छेलए से कटलौं। आब तँ लिखलहो कटल। धिया-पुताकेँ जे हेतै, अपन कऽ लेत। हमरा जीबैत धरि तँ घरक दुख मेटा गेलइ। सौंसे परिवारपर आँखि खिड़बैत माए बजली-

"बौआ, कोठरी तोंही सभ लएह, ओसारक एके भाग हमरा-ले बहुत हएत?"

अपन जीत देखैत पुतोहु झाड़-झाड़ैत बजली-

"माएकेँ कहियो घरसँ सिनेह भेलैन जे हेतैन?"

अपन जीत माए सेहो देखैत। सभ दिन सहीटमे रहलौं, चललौं-

फिरलौं, मुदा आब ऐ बुढ़ाड़ीमे जे सीढ़ीपर ऊपर-निच्चाँ करैत टाँग-हाथ तोड़ि ली, एहेन वुधियारि हमहीं छी। पुतोहु दिस देखैत बजली-

"कनियाँ, कहुना भेलौं तँ बाले-बोध भेलौं। एकटा उझटो बात बाजब तँ हम नै बरदास करब तँ आन करत। हमरा लिऐ सभसँ नीक ओसारे। सभ दिन राति-बिराति घरक चौबगली घुमै-फिरै छी, घर-अँगना टहलै-बुलै छी। अन्हार-धुन्हारमे ऊपर-निच्चाँ करब नीक हएत।"

❑

शब्द संख्या: 210

छोटका काका

दियादिक दसो भैयारीमे मुनेसर सभसँ छोट, तँए सभ 'छोटका काका' कहै छैन। जाधैर भैयारीक सभ जीबै छेलैन ताधैर कहियो छोट-पैघिक बात मनमे नै उठलैन। उठबो उचित नहियेँ। मुदा छोटका कक्काक जखन उमेर बढ़लैन, भैयारीक नबो भाँइ दुनियाँ छोड़ि देलखिन, तखन तँ उठबो उचिते छेलैन आ उठबो केलैन। उठलैन ई जे जखन सभ भाँइ छला तखन जँ 'छोटका काका' कहै छल तँ कहै छल मुदा आब किए कहैए? जँ से कहैत रहल तँ ऑफिसक चारिम श्रेणीक कर्मचारी जकाँ बड़ाबाबू कहिया बनब? साठि बर्खक उमेर टपलौं, माथो उजरा गेल मुदा 'छोटका कक्का'क 'छोटके काका' रहि गेलौं! एक तँ औहुना छोटकासँ सझिला, सझिलासँ मझिला, मझिलासँ बड़का बनैमे केते टपान अछि, तैपर अखन धरि एको टपान नै टपलौं। देहक रंग-रूपसँ बाबा बनैक खाढ़ीमे आएल जाइ छी मुदा पीरारक गाछ जकाँ बाढ़ि कहाँ अबैए..?

असमंजसमे पड़ल मुनेसरक मनमे उठल। प्रचार प्रसारक जमाना आबि गेल अछि। नकलियो असली बनि बजारमे दौड़ रहल अछि, तँए जँ किछु करब नहि तँ ओहिना रहि जाएब। भीखमंगो तँ नहियेँ छी जे जन्मेसँ बाबा कहबए लगब। अपन पैरवियो अपने केना करब! अनेरे लोक धरखनाह कहए लगत। मुदा जे विचार अपने उठि रहल अछि ओ पत्नीकेँ कहाँ उठि रहल छैन? ओ तँ 'छोटकी काकी' सुनि आरो मुस्कियाइत रहै छैथ।

पत्नीकेँ सोर पाड़ि मुनेसर बजला- “देखियो जे घर-परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरि ‘छोटके काका’ कहैए से उचित भेल?”

छोटका कक्काक मनमे रहैन जे स्त्रीगण जानि कऽ कहै छिऐन जइसँ दसठाम औहुना बजती। तइसँ अपन काज ससरत। मुदा छोटकी काकी गबदी मारि देलखिन। केतौ किए बजती। अपन लाभ के छोड़ैए जे ओ छोड़ितैथ। ..काकीकेँ कहि छोटका काका कान पाथि देलैन जे केम्हरोसँ तँ हवा चलबे करत।

मुदा केतौ चाल-चूल नहि। मास दिनक पछाइत पुनः छोटाक काका काकीकेँ मोन पाड़ैत दोहरौलैन- “कहने जे रही तेकर सुनि-गुनि कहाँ केतौ पबै छी?”

एक दिस छोटका कक्काक उदास मन, दोसर दिस काकीक ओलड़ैत-मलड़ैत मन...। दोसरकेँ अनुकूल बना किछु कहैयौमे आनन्द अबै छइ। मुदा जहिना पुरुखकेँ जेठ भेने आनन्द अबै छै तहिना तँ स्त्रीगणोकेँ छोट भेने अबै छइ। जँ नै अबितै तँ किए भौजाइकेँ सभ एक लाड़ैन लाड़ि दइए। भलेँ एक लाड़ैनक बदला सात लाड़ैन किए ने खाए मुदा होइ तँ सएह छइ। छोट भेने एते लाभ तँ होइते छै जे जेठ जकाँ अशिष्ट बोलीसँ बँचैए...।

मुनेसरक मनकेँ बुझबैत काकी बजली- “अच्छा देखियो ने समय केतौ भागल जाइए। भदबरिया मेघ कि कोनो साँझ-भोर तकैए।”

जहिना चाह पीब मन तँ मानि जाइए मुदा पेट नहि, तहिना टकटकी लगा मुनेसर छोटकी काकी दिस देखैत रहला।

❑

शब्द संख्या: 398

सीमा-सरहद

खेते-पथार जकाँ आनोक सीमा-सरहद होइ छइ। मुदा किछु मानबो करैए तँ किछु अतिक्रमणो करैए। किछु बुझनिहार बुझितो तोड़ैए तँ किछु बिनु बुझनौं तोड़ैए।

इंजीनियरिंग कौलेजसँ रिटायर भेलाक पाँच सालक पछाइत सुधीर काका गामेमे रहबाक विचार केलैन। विचार अपने नइ केलैन, काकीक दवाबमे केलैन। कारण भेल जे राजधानी–शहरमे अपन मकान बेसाहैकाल मनमे ऐबे ने केलैन जे राजधानीक राजधानीकरण भऽ जाइ छइ। सभ तरहक राजधानी बनैक लक्षण आबि जाइ छइ।

अपराधीक भाँजमे पड़ि सुधीर कक्काक जे धन लूटेलैन से तँ सवुर केलाह, जे बाढ़िक पानि जकाँ आएल-गेल, मुदा दुनू परानी मारि तेहेन खेलैन जे राजधानी छोड़ि गाम दिसक बाट धऽ लेलैन।

दुनू परानी–सुधीर काका–गाम तँ आबि गेला मुदा इंजीनियर रहने मनमे रहबे करैन जे गामो-समाज तँ सएह बुझत। मुदा से नइ भेलैन, बाहरे जकाँ गामोमे बुझि पड़ैन। भातिजकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“मनोज, गाम अही दुआरे एलौं जे अपन दर-दियाद, सर-समाजक बीच हबगब करैत जिनगी ससारि लेब। मुदा... ।”

सुधीर कक्काक विचार मनोज बुझि गेल। मुदा समुचित उत्तर नइ देब उचित बुझि, प्रश्नकेँ बहटारि बाजल- “काका, गामक लोकमे ओते

सूझ-बूझ छै जे..?”

मनोजक उत्तरसँ सुधीर काकाकेँ संतोष नइ भेलैन, तँए दोहरौलैन-

“नइ बौआ, किछु दोसर बात छइ।”

मनोज कहलकैन-

“काका, जाधैर गाम-समाजक सीमा सरहद बुझि अपन सीमा-सरहद नइ बनाएब, ताधैर... ।”

❑

शब्द संख्या: 200

रमैत जोगी बोहैत पानि

की मनमे एलैन कि नहि, एकाएक राधाकान्त बाबा घर-परिवारसँ भागि जाइक मन बना लेलैन। ओना, समाज तँ समाज छी जे खाइकाल वौसैए, पड़ाइ-काल वौसैए, रूसलमे वौसैए, नहि जानि आरो कोन-कोन-काल वौसैए। मुदा से राधाकान्त बाबाकेँ कियो नै वौसए एलैन। ओना, मनमे रहैन जे कियो औता तँ अपन मनक बेथा कहबैन। केना नहि कहिऐन! उपदेश झाड़लासँ झड़ै छै आकि उपैत केलासँ। मुदा मनक बात मनेमे अँतरी जकाँ घुरियाइत बहत्तैर हाथक भऽ गेलैन। केकरो नइ देखि फेर मनमे उठलैन जे जखन समाजे नहि, तखन परिवारक केते आशा? बड़ करत तँ मुँहमे आगि धरौत, कठियारी के जाएत? तहूमे तेहेन चालि-ढालि सभ धेने जाइए जे एको दिन रहब की जहलसँ कम अछि..! मुदा तैयो राधाकान्त बाबा आशामे रहैथ जे परिवारोक कियो जँ वौसए चलि औत तँ वौसा जाएब। अनेरे ऐ बुढ़ाड़ीमे केतए वौआएब। मुदा आशा अशे रहि गेलैन। ओना, अन्त-अन्त धरि आशा रहैन जे आन-आबए वा नहि, मुदा..?

दादी तँ दादीए भऽ गेली। सृजनकर्ता कुम्हार बरतन गढ़ि ओकर मुँह-कान नै सोझ करए, तँ केहेन बरतन बनत? तहिना दादी अपना बोनमे हराएल। किए वौसए औतैन। तहूमे कोनो कि हराएल बात अछि जे मरैबला मरबे करैए आ चुड़ियो-सिनूर फोरि-मेटा जीबैबला जीबे करैए। मुदा जीबैक जगह तँ चाही...।

दरबज्जासँ उठि राधाकान्त बाबा कम्मरक मोटरीमे लटकैत कमण्डल कान्हपर लैत ओसारसँ निच्चाँ उतरला कि पोता देखलकैन। देखिते दौगल आबि पाछूसँ मोटरी पकड़ैत कहलकैन-

“केतए चललह?”

बहैत पवित्र धारक स्नान जकाँ राधाकान्त बाबा हरा गेला। मनक बेथा मनेमे गुमसैड़ प्रेमक पेंपी बनि मुहसँ निकलए लगलैन। मुदा किछु उत्तर नहि पाबि पोता कहलकैन-

“हमहूँ जेबह!”

संगी पाबि बाबा उत्तर देलखिन-

“रमैत जोगी बोहैत पानि..!”

❑

शब्द संख्या: 253

गंजन

जखने सुनीता दादी बेटीक हाल-समाचार सुनलैन जे तेहेन रौदीमे पड़ि गेल जे एको कनमा धान नै हेतै, तखनेसँ बाबापर आँखि गड़ौने रहैथ जे जखने अवसर भेटत, नीक जकाँ गंजन करबैन। ओना, बाबाकेँ बेटी कि इलाकेक समाचार बुझल रहैन मुदा सुनीता दादीक कानमे अइले नै देलखिन जे कएले की हेतैन, तखन तँ मनरोग चढ़ा देबैन। तइसँ नीक जे कहबे ने करबैन, अनका मुहेँ जे सुनबे करती तँ औहुना घोंघौज कऽ लेब।

गर चढ़िते सुनीता-दादी बाबाकेँ कहलखिन- “कहाँ दन मृत्युनजय-बेटीकेँ एको कनमा धान नै हेतै! सात तूर दिन केना खेपतै? सभटा आगि लगौल अहाँक छी। जेहेन गाम ओइ तीनू बेटीक केलौं तेहेन गाम अहाँकेँ मृत्युनजय बेटी-ले नै भेटल!”

दादीक गंजन गजिते बाबाक मनमे उठलैन जे जिनगीमे जँ किछु अराधि कऽ, माने संकल्पित भऽ कऽ नइ चललौं तँ खाली डिब्बामे झुटका दऽ झुनझुना बनौने की हएत। ‘दस कोस सीमा जे बन्हलिऐ..!’ लोरिक की फूसिए कहने छथिन? जैठाम राँइ-बाँइ भेल गामक खेत जकाँ अनेको छोटका-बड़का आड़िमे जिनगी बन्हि गेल अछि, तैठाम कइए की सकै छी? अखनो ओ विचार मनमे मरल कहाँ अछि जे एक बाप-माइक धिया-पुता एकरंग जिनगी नइ जीबए...।

❑

शब्द संख्या: 178

सजए

बजैत लाज होइए, मुदा नहियोँ बाजब तँ पुरुख कथीक... । जहिना सभकेँ होइ छै तहिना जूति-भाँति लेल पत्नीसँ मुहाँठुट्ठी भऽ गेल। दुनू दू दिशाक बुझनूक छी। खिसिया कऽ अपने काज करए खेत चलि गेलौं। जलखै नै पहुँचल। सवुर केलौं। मुदा खीस आरो तबैध गेल। अबेर धरि खेतेमे खटैत रहलौं।

गामपर आबि नहा-सोना खाइले गेलौं। ओढ़ना ओढ़ि पत्नी घरमे सुतल छेली। तामसे नै टोकलयैन। मुदा तैयो अनठा कऽ बच्चाकेँ पुछलिऐ-

“बुच्ची, माए केतए छथुन?”

कहलक-

“मन खराप छै, सुतल अछि।”

पुछललिऐ-

“तोरा बुते खाएक परसल हेतह?”

कहलक-

“भानस कहाँ भेल हेन।”

❑

शब्द संख्या: 90

घटक बाबा

एहेन अगियाएल क्रोध घटक बाबाकेँ जिनगीमे पहिल दिन छेलैन जेहेन आइ भोरे उठलैन। एक तँ औहुना देह घटने थोड़-थाड़ क्रोध सदिखन रहबे करै छैन मुदा घटबी जिनगीमे घटती काज भेने जहिना होइ छै तहिना भेलैन। ओना, देहक घटबी अनका जकाँ नइ रहैन, किएक तँ सभ दिन रहने केकरो फेहम बनल रहै छै, सभ किछु दुरुस्त रहै छै, मुदा तइसँ भिन्न घटक बाबाकेँ भेलैन। जेना केरा गाछक वा अनरनेबा गाछक पानि सुखने खलपैट जाइए तहिना भेने घटक बाबाकेँ घरक पहिलुका सभ कपड़ो-लत्ता आ जुतो-चप्पल भऽ गेलैन। दहेजुआ देल कुरतो-गंजी आ जुत्तो-पप्पल ढिल-ढिलाह बनि गेलैन। एकर माने ई नहि जे कुरतो-गंजी आ जुतो-चप्पल बढ़ि कऽ ताड़ भऽ गेलैन तँए ढिल-ढिलाह भऽ गेलैन। अपने सुखि कऽ पलास भऽ गेल छैथ। ओना, घरमे तेते-रास कपड़ो आ जुत्तो-चप्पल छैन जे अपन जीता-जिनगीकेँ के कहए जे मुइलोपर दान-पुन करैत उगड़िए जेतैन। मुदा कुछप भेने ओहो सभ कुछपिये जेतैन जइसँ कोनो सोगात नै लगतैन। जँ अपनो पहिरता तँ लेबरे जकाँ लगता आ दानो-पुन करता तैयो सएह हेतैन। खाएर जे हौउ, मुदा औझुका अगियाएल क्रोध बिनु हवोक ने पजैर जाए तेहने लहलही छैन।

कनभेंटक सातम श्रेणीक पोती–सरस्वती–जिज्ञासु बनि पुछलकैन-

“बाबा, पढ़ल-लिखल लड़काक संग बिनु पढ़ल-लिखल लड़कीक बिआह केते करौलिऐ आ बिनु पढ़ल-लिखल लड़काकेँ पढ़ल-लिखल

लड़कीक संग केते करौने हेबइ?"

पोतीक पुछल प्रश्नक उत्तर बाबा नकारि केना सकै छैथ। कविताक तुकबन्दी जकाँ भलैं कुछप किए ने हौउ, मुदा लय तँ भरबे करता...।

छ-अनियाँ मुस्की दैत घटक बाबा कहलखिन-

"कोनो की डायरी लिखि कऽ रखने छी, अनगिनती बुझह।"

बाल मन सरस्वतीक, अनगिनतीमे ओझरा गेल। मुदा जहिना भूखक तृष्णाकेँ पानियोँसँ किछु समय बिलमौल जा सकैए, मुदा तृष्णो तँ तृष्णा छिऐ। ठोस जहिना पानिमे नै भँसियाइत, पानि हवामे नै उड़ैत तहिना सरस्वतीक तृष्णा नइ उड़ल। पुन: दोहरा कऽ बाजल-

"बाबा, बिआह किए होइ छइ?"

पाँच किलो मोटरीकेँ तँ टारि देलिऐ, मनहीकेँ केना टारबै? जहिना पएर पड़िते साँप फन-फना उठैए तहिना घटक बाबाकेँ फनफनी उठलैन। एक तँ औहुना घटबी देह थरथराइते रहै छैन तैपर आरो पकैड़ लेलकैन। मुदा जहिना गनगुआरि देखि नागक फनकी टुटि जाइत, तहिना दस बर्खक पोतीकेँ सोझहामे ठाढ़ भेने घटक बाबाकेँ भेलैन।

❑

शब्द संख्या: 335

आने जकाँ

हलसल-फूलसल पत्नी बजली-

“आइ धरि अहाँ कहियो मोनसँ नै चाहलौं। सभ दिन बिगड़ले रहै छी!”

पत्नीक बात सुनि क्षुब्ध भऽ गेलौं जे एहेन बात किए कहलैन? निच्चाँ-ऊपर देखि पुछलयैन-

“अहाँ केते चाहै छी?”

कहलैन-

“जहिना सभकेँ देखै छिऐ।”

कहलयैन-

“आने जकाँ हमहूँ भऽ जाइ तखन ने?”

❑

शब्द संख्या: 46

दान-दछिना

तरगरे उठि पण्डित काका नित्य–कर्मसँ निवृत्ति भऽ झुनझुनाबला बत्तीक ठेंगा नेने सड़कपर आबि चिकैर-चिकैर बाजए लगला- “ई समाज रहैबला नै अछि। आन बिसैर जाए तँ बिसैर जाए मुदा मरै बेरमे केना मुँह बन्न करब जे पुरान-पोथीक दान सभसँ नीक नै होइ छइ।”

आँगनसँ पत्नी सुनिते धड़फड़ाएल दौगल आबि पुछलकैन- “भोरे-भोर की भऽ गेल जे एना अड़ाहै छी?”

पत्नीक प्रश्नसँ पण्डित काकाकेँ दुख नै भेलैन। खुशीए भेलैन। कम-सँ-कम पत्नियो तँ लगमे आबि पुछलैन। ..खखास करैत बजला-

“कहू जे भोज-काजमे लोक लाखक-लाख रुपैआ फूकि दइए, धोती-लोटा बाँटि दइए। अहीं कहू, जे लोक आब जग-गिलास भऽ गेल, फुलपेन्टे-कोट भऽ गेल किने। तैठाम धोती-लोटाकेँ के छूअत। जे छुऐबला अछि ओइले एकोटा पाइ नहि, लुटबए चाहैए, तखन अनेरे रहि कऽ की करब। मन हुअए तँ अखने विदा भऽ जाउ।”

पण्डित काकाकेँ संगीक जरूरत देखि पण्डिताइन काकी वौसैत कहलखिन- “अखन धरि अहूँ ने तँ कहियो बाजल छेलौं। समाज दोखी बनौत। तामस घोंटि लिअ।”

❑

शब्द संख्या: 151

उड़हैड़

एक तँ ओहिना जुड़शीतलक भोर, चारिये बजेसँ इनार चन्द्रकूप बनि अकास-पताल एक केने, सिरसिराइत वसन्त सिर सजबै पाछू बेहाल, जे जेतइ से तेतइसँ पीह-पाह करैत, तैपर तीन दिनसँ एकटा नवका गप सेहो गाममे उपैक गेल अछि। ओ ई जे कपरचनमा उड़हैड़ गेल! कपरचना उड़हैड़ गेल..!

ओना, ऊपरका जहाज जकाँ स्त्रीगणक बीच गप हवाइ भेल मुदा पुरुखक बीच कोनो सुनि-गुनि नहि। तँए कपरचनमाक पिता–रघुनाथ–ले धैनसन। माए कुड़बुड़ाइत रहइ, मुदा सासुक डरे मुँह नै खोलैत। ओना, परगामी भेने माइयो आ पत्नियोंक मन ओते घबाह नइ होइत। होइत तँ ओतए अछि जेतए सीमानक आड़ि धारक बाढ़िमे भँसिया जाइए। कपरचनमाक दादी–कुसुमा दादी–क मनमे मिसियो भरि हलचल नहि। कोनो कि बेटी जाति छी जे अबलट लागत। बेटा धन छी जेतए रहत ओतए खुट्टा गाड़ि कऽ रहत। कियो बजैए तँ अपन मुँह दुइर करैए।

जुड़शीतल पाबैन, अपने हाथे कुसमा दादी इनारसँ पानि भरि असिरवाद बँटबे करती। तहूमे तेहेन गप परिवारक उड़ल छैन जे बाँटबो जरूरीए छैन। ओना, दादी अन्हरगरे उठली, मुदा पहरक ठेकान नै रहलैन। जखन गाममे पीह-पाह शुरू भेल तखनए फुरफुरा कऽ उठि लोटा-डोल नेने इनार दिस बढ़ली। मनमे ईहो रहैन जे इनार परहक असिरवाद अँगनाक अपेक्षा बेसी नीक होइ छइ। तँए सभसँ पहिने इनारपर पहुँचब

जरूरी बुझलैन। आब कि कुशक जौर आकि घट थोड़े रहल, मुदा तैयो...।

इनारसँ डोल ऊपरो ने भेल छेलैन कि नवनगरवाली अबिते देखलैन जे दादी असगरे छैथ तँए अवसरक लाभ उठा ली, नइ तँ पचताइये कऽ की हएत...। उपरागी जकाँ नवनगरवाली पुछलखिन-

"उढ़ड़ा एलैन कि नहि?"

नवनगरवालीक बोल कुसमा दादीकेँ मिसियो भरि नै कबकबौलकैन। मनमे नचैत रहैन जे एके पीढ़ी ऊपरक लोकक ने संकोच करैए, हम तँ दू पीढ़ीक छी। बाल-बोधक उकठपनो गपक जवाब उकठपने जकाँ दिऐ से केहेन हएत! नवनगरवालीक आँखिमे आँखि चढ़बैत दादी बजली-

"कनियाँ, अहाँ कहुना भेलौं तँ पोते-पोती भेलौं। किछु छी कपरचना तँ बेटा धन छी। जँ केकरो लैयो कऽ चलि गेल हेतै तँ सोचि नेने हेतै जे ठाठसँ जिनगी केना बिताएब। जेतए रहत जगरनथिया खन्ती गाड़ि देत।"

भादवक बर्खा जकाँ कुसुमा दादीक मुँह बरिसैत रहैन। इनारक किनछैरमे कनबाहि भेल दुलारपुरवाली सेहो दादीक सभ बात सुनि नेने रहैथ। मन भिन-भिना गेल रहैन। तैपर जुड़शीतलक उखमजक जे टटका-बसियाक भिरंत छिहे। टटका नीक आकि बसिया? बसिया नीक आकि तेबसिया? तेबसिया नीक आकि अमवसिया? मुदा टटके नवनगरवालीक पक्ष लैत दुलारपुरवाली दादीक सोझ आबि बजली-

"सभटा कएल हिनके छिऐन। दुनियाँमे नाओंक अकाल पड़ि गेल छेलै जे 'कपरचनमा' नाओं रखलखिन?"

सतैहिया बर्खाकेँ छुटैक आशामे थोड़े छोड़ल जा सकैए। बीचोमे जोगारक जरूरत अछिए। जँ से नइ तँ बिल-बाल होइत केमहर-केमहर बहि जाएत से थोड़े बुझि पेबइ। कुसमा दादी दुलारपुरवालीकेँ कहए

लगलखिन-

"तों सभ फुलक नाओंकेँ बेसी पसिन करै छहक, मुदा तोंही कहह जे जेते अपना गाममे फूल अछि ओकर मूल्य कि हेबाक चाही। मुदा देखै कि छहक। पोताक नाओं कोनो अधला रखने छी जेहेन चालि-ढालि देखलिऐ तेहेन नाउओं रखि देलिऐ।"

दादीक उतारा सुनि नवनगरवाली मुँह चमकबैत बजली-

"दादी, अबेर भेल जाइ छइ। एक चुरूक असिरवाद देती तँ दोथु नइ तँ अपन राखथु।"

अगुआएल काजकेँ पछुआइत देखि दादी डोल नेनहि नवनगरवालीकेँ कहलखिन-

"मन तँ होइए जे सौंसे डोल उझैल दिअ मुदा अखन काजक बेर अछि, जा तोहूँ घर-अँगना देखहक।"

❑

शब्द संख्या: 504

मत्हानि

भोँटक तीन मासक पछाइत श्याम आ कमलनाथकेँ भेँट भेल। ओना, एक गामक रहितो एनाहे-ओनाहे सम्बन्ध दुनूक बीच भोँटसँ पहिने छल, मुदा महिना दिनक दौड़ एते लग आनि देलकै जे एक्के गाछक फल जकाँ बुझि पड़ए लगल।

एक तँ तीन मासक बँकियौता गपो-सप, अपन पार्टीक हारियो आ दोसराक सरकारोक हाल-चाल पार्टी लोकक मुहेँ सुनबो तँ जरूरीए अछि। तैसंग माटिक बान्हपर चैत-बैशाखमे धूरा-गर्दा सेहो उड़िते अछि, तहूमे तेहेन घोड़दौड़क समय अछि जे आरो उड़ि अकासकेँ अन्हरौने अछि...।

भोँटक हारिसँ कमलनाथक मन झूकल तैसंग परिवारक तीन पुश्तक सेवा सेहो हराइत-बिरहाइत देखि आरो झूकि गेल। खसल मने कमलनाथ बाजल-

"भाय, की हाल-चाल अछि?"

कमलनाथकेँ श्याम आँकि लेलक। हारल लोकक बीच चढ़ा-उतरी होइते छइ। खसैत कमलनाथकेँ देखि चढ़ैत श्याम बाजल-

"पूरबते।"

श्यामक उत्तर पाबि कमलनाथ भक-चकमे पड़ि गेल। पैछला बात बुझने बिना आगू केना बढ़ल जाएत। मने-मन सोचए लगल जे 'पूरबत'क की अर्थ भेल? मुदा श्यामक पूरबतक अर्थ रहए अपन राजनीति। देशक जे हेतै से देशक लोक जनतै; तइसँ हमरा की। अपन ठीकेदारी, ऑफिसमे

हेरा-फेरीक संग समाजमे सराध-बिआह चलैत रहतै, सभ अबाद रहत। ई की सेवा नै भेल?

श्यामक उत्तर नइ बुझि कमलनाथ पुनः दोहरबैत पुछलकै-

“भाय, नै बुझि पेलौं?”

अपन गोटी लाल होइत देखि श्याम अगुआएल नेता जकाँ विचारए लगल जे अगुआएब तँ वएह ने भेल जे अपन विचारकेँ रूचिगर बना दोसरकेँ बुझाएब। मुदा लगले मन चकभौर लेलकै। मुहाँ-मुहीं बाजब आ मुँह घुमा कऽ बाजब एक्के भेल! वएह ने कला छी। ..अनुकूल होइत श्याम बाजल-

“भाय, भोँटक पछाइत जेना हमरो मन उड़िया-बिड़िया गेल। पहिने जेना करै छेलौं से आब कहाँ कएल होइए। तखन तँ ढीलो-उड़ीसक दवाइ खा-लेब,से केहेन हएत?”

❑

शब्द संख्या: 258

मेकचो

पछुआ पकड़ैक मिथिलांचलक किसानकेँ अपनो दोख ओतबे छैन जेते सरकारक। किएक तँ ओहो अपनाकेँ जनतंत्रक किसान नइ बुझि पेलैन।

पाँच बीघा जोतक किसान चुल्हाइ। आठम दसकमे गहुमक खेतीक संग सरकारी खादक अनुदान आएल। बीघा भरि गहुमक खेती चुल्हाइ करत। एक बोरा यूरिया आ एक बोरा ग्रोमर खादक पूजी लगबैक विचार केलक। ओना, समुचित खादो आ पौष्टिक तत्वो खेतमे देब जुरब परहक फुरब भेल।

ब्लौकक माध्यमसँ खाद भेटै छइ। पाँच दिन बरदा चुल्हाइ भी.एल.डब्ल्यू.सँ फर्म भरौलक। तीन दिनक पछाइत कर्मचारियो लिखि देलखिन। दू दिनक पछाइत बी.ओ. साहैबक लिखला पछाइत फर्म ब्लौक-ऑफिस पहुँचत जे आठम दिन भेटतै।

फार्म जमा केलाक पछाइत घरपर आबि चुल्हाइ चपचपाइत पत्नी लग बाजल-

“ऐ बेर अपन गहुमक खेती नीक हएत!”

पतिक चपचपीमे चपचपा रूसनी चपि-चपि गैंचियाइत नजैर दैत बजली-

“फगुआमे नवके पुड़ी खाएब।”

तीस दिसम्बरकेँ चुल्हाइ गहुम बागु केलक। पच्चीस किलो कट्ठा

उपज भेल।

टुटैत उपजासँ टुटल चुल्हाइक मन पत्नीकेँ कहलक-

“ऐ बेरसँ नीक पौरुके भेल। चालीस किलो कट्ठा भेल रहए।”

रूसनी बजली-

“एना किए भेल?”

चुल्हाइ बाजल-

“तेहेन चमरछोंछमे पड़ि गेलौं जे मेकचो-पर-मेकचो लगैत गेल। जइसँ बागु करैमे डेढ़ मास पछुआ गेलौं! उपजा टुटि गेल!”

पतिक घाउपर मलहम लगबैत रूसनी बजली-

“खेती जुआ छिऐ। हारि-जीत चलिते रहै छइ। तइले की हाथ-पएर मारि बैस जाएब।”

बिसवास भरल पत्नीक बात सुनि संकल्पित होइत चुल्हाइ बाजल-

“आब एहेन फेरिमे नै पड़ब।”

❑

शब्द संख्या: 216

झुटका विदाइ

जहिना हारल नटुआकेँ झुटका विदाइ होइ छै तहिना ने हमरो भेल! मनमे अबिते प्रोफेसर रतनक चिन्तन धार ठमैक गेलैन।

पिताक श्राद्ध-कर्म सम्पन्न भेलाक तेसरा दिन प्रोफेसर रतन दरबज्जाक कुर्सीपर ओंगैठ कऽ बैस मने-मन बीतल काजक समीक्षा करै छला। जहिना नख-सिखक वर्णन होइत तहिना ने सिख-नखक सेहो होइए। मुदा काजक समीक्षा तँ मशीन सदृश होइए, जे पार्ट पाछू लगौल जाइए आ खोलैकाल पहिने खुलैए।

प्रोफेसर रतन छगुन्तामे पड़ल छैथ जे समय केतए-सँ-केतए ससैर गेल आ...। आब की थारी-लोटा आ कपड़ा-लत्ताक घटबी ओइ तरहेँ अछि जेना पहिने छल? कहू, ई केहेन भेल जे एते रुपैआ लोटा पाछू गमा देलौं! जँ समाजक बात नै मानितौं तँ दोखी होइतो, मानलौं तँ की मानलौं! लोटाक चर्च हुनका सभकेँ नै करक चाहिऐन। तहूमे तेना लाबा-फरही करए लगला जे इस्टिलिया केना देबै, लोहा छी अशुद्ध होइए। नियमत: फूल, पितैर वा ताम हेबाक चाही! चानी-सोना तँ राजा-रजबारक भेल। ..विचार अनिवार्य भऽ गेल। फेर एहेन प्रश्न किए उठल जे घरही नै दऽ बच्चासँ बुढ़ धरि जे पंच औता सभकेँ होइन। सियानोक पनिपीबा वएह हएत जे धिया-पुताक। तरखन तँ लोटासँ लोटकी धरिक ओरियान करू। तहूमे तेहेन अनरनेवा गाछ जकाँ भरिगर गाछ ठाढ़ कऽ देलैन जे हाइ स्कूलक शिक्षक–गंगाधर–लोटाक संग धोतियो बँटलैन। तैठाम एको अलंग

नै करितैथ, से केहेन होइतैन।

बजारसँ घुमला पछाइत जहिना नीक वस्तु देखलापर मनमे उमकी उठैत, आ अधला देखलापर डुबकी लिअ पड़ैत, सएह ने भेल...।

प्रोफेसर रतनक मन कोसी-कमलाक एकबट्ट भेल पानि जकाँ घोर-मट्ठा भऽ गेलैन। चिलहोरि जकाँ झपटैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"मन बिसाइन-बिसाइन भेल जाइए आ अहाँकेँ एक कप चाहो ने जुड़ैए?"

पतिक आदेश सुनि सुजीता चाहक ओरियान केलैन।

चाह दैत सुजीता, पजरामे बैस जट-जटीन जकाँ पुछलखिन-

"की भेल जे एना मन विधुआएल अछि?"

ओना, चाहक चुस्कीसँ रतनक बिसबिसी थोड़े कमलैन जरूर, मुदा निड़कटोवैल भऽ कऽ छुटल नै छेलैन। ओही झोंकमे झोंकि देलखिन-

"हएत कथी झुटका विदाइ भेल!"

पतिक बात सुजीता नै बुझि सकली। बुझियो केना सकितैथ। मुदा रोड़ाएल दालिक सुगन्ध जकाँ अनुमानए लगली। मनमे जे कुवाथ भेल छैन से जाबे खोलता नइ, ताबे केना बुझब? जँ कोनो तेहेन बात रहितैन तँ एना साँप जकाँ गैंचिया-गैंचिया किए चलितैथ! बजली-

"कनी-काल अराम करू, हमरो हाथ काजेमे बाझल अछि, ओकरा सम्हारि लइ छी।"

❑

शब्द संख्या: 359

मुँहक खतियान

ऐ बेर दुर्गापूजाक नव उत्साह अछि। उत्साहो उचिते, हाले-सालमे मलेमासक विदाइ भेल अछि। एक दिन माघ बितने तँ आशा फुरफुराइत पाँखि झाड़ए लगैए, भलैं पच्चीस दिनक टप-टप पाला खसैत शीतलहरी आगू किए ने हुअए। मुदा से नहि, कहियो नावपर गाड़ी चढ़ैए तँ कहियो गाड़ीपर नाव। तहूमे दुनूक बीच, एहेन रंग-रूपक मिलानी रहै छै जे दुनू दुनूकैं पीठेपर उठबैए आ पेटेमे रखैए। से ऐ बेर थोड़े हएत, तेते ने लोक रौदियाएल अछि जे महारेपर सँ कुदि-कुदि उमकत...।

औझुका दिन भगवतीक माटि लेल जाएत। भोजक पाते देखि धिया-पुता चपचपाए लगैत जे खूब खेबैन। आखिर भोज होइते किए छइ। चारि बजे भोरेसँ पीह-पाह शुरू भऽ गेल। ओना, रघुनी भायकैं बुझल रहैन मुदा तैयो पीह-पाह नीक नै लगैत रहैन। कारण रहइ जे दिनक फल भोजन बुझि क्रमिक काजक क्रिया बुझै छैथ। जाबे चौकक हवा-पानि पीबए जइतैथ, तइसँ पहिनहि चाहक चुल्हि पजरल देखलैन।

अपन मनकमना पुरबैत तेतरा दस कप चाहक भोज केलक। भोजक सत्तैरमे भोजैत अपन बात बजिते अछि, तेतरो बाजल-

“भाय, ट्रेन्ड डरेबर भऽ गेलियौ, भगवतीक दयासँ आब कोनो दुख-तकलीफ परिवारकैं नै हएत।”

दोकानक दोसर ब्रेंचपर पोखरिया, असामी आ रामेसर सेहो बैसल छल। तेतराक बात जेना रामेसरक छातीमे छेद केलकै तहिना रामेसरकैं

झोंक चढ़ि गेलइ। बाजल-

“बाप जे मरूआ लेलकै से तँ अखन तक सठाएले ने भेलइ। आ..!”

रामेसरक बात सुनिते तेतरा लोढ़ियौलक। मुदा कएल की जाए। दुनूकेँ थोम-थाम लगबैत रघुनी भाय कहलखिन-

“दू घन्टा लोककेँ बातो बुझैमे लगतैन, तँए दू घन्टा दुनू गोरे अपन-अपन घरपर जाउ।”

घर दिस रामेसर बढ़ैत बाजल-

“बाढ़िमे घर खसि पड़ल, नइ तँ अखने बोही आनि कऽ पंचक बीचमे फेक दैतिऐ।”

घरमुहाँ होइत तेतरा बाजल-

“की बुझि पड़ै छै जे बबेबला सनकी अछि, झाड़ि देबइ। जँ ओकर बाँकीए छै तँ मनुक्ख जकाँ फुटमे कहैत।”

❑

शब्द संख्या: 278

कोसलिया

सीकसँ खसल मटकूर जकाँ सोमन कक्काक मन छहोंछित भऽ फुटए लगलैन। बिनु भाँग पीनौं जेना अफीमक निशाँ चढ़ि गेलैन तहिना नितागैत भेल देहकेँ खरौआ जौड़ीसँ घोरल खाटपर चितंग पटकलैन। दंगल जकाँ नहि, जे किछु हारबो करैए, किछु जीतबो करैए आ किछु खिचड़ियो बनैए। औनाइत मन उधिया-उधिया बजैत जे चारू बेटाक पिता छी, पालन-पोषन करै छी तखन किए ने बुझि पेलौं जे घरमे कोसलिया सेहो बसि रहल अछि? मनक सीमा टपि सोमन कक्काक मुहसँ निकललैन-

“अनेरे परिवार-परिवार करै छी, सत्तैर बर्खक पसेनाक की मोल रहल! यएह ने जे घरे-परिवारेमे एहेन मोइन फोड़ि दुदिसिया धार बहए लगल। कुट्टी-कट्टा जकाँ जँ दुनू दिस धार बनाएब तँ नारक मुट्ठी घुसकबै-काल हाथ खड़ाइक डर रहबे करत!”

सोमन काकाकेँ देखि घुरनी काकीक मन मिसियो भरि हलचलेलैन नहि। जिनगीक अनेको क्रोध देखने छैथ, अनुभवी छैथे...। कनी फरिक्केसँ थर्मामीटर लगा घुरनी काकी कक्काक रोग नापए लगली। मुदा पुरना थर्मामीटरसँ तँ पुरना रोग परेखमे अबैत नवका केना औत? सहए भेल। ओना, सोमन काका अपने ठकमुड़ा गेल रहैथ जे एना किए भेल! मुदा तैयो घुरनी काकी बीख उतारैक मंत्र चलौलैन-

“बेसी भीड़ भऽ गेल। मन थीर कऽ कऽ नहा-खा लिअ। खा कऽ

जखन अराम करब तखन अपने मन चेन भऽ जाएत।”

काकीक खटमधुर गप सोमन काकाकेँ आरो अमता देलकैन। झटकीक झटका जकाँ झटहा झटैक देलखिन-

“जअ-तिल आनि उसरैग दिअ। हमहूँ अहाँकेँ उसरैग दइ छी। कोन भाँजमे अनेरे पड़ल छी। जैठाम द्रौपदीसँ लऽ कऽ रघूबाबू धरि कुरसी जमौने छैथ, तैठाम पार पाएब असान छइ..!”

❑

शब्द संख्या: 234

हूसि गेल

भोज खा बाबा अबिते रहैथ कि पोता–रमचेलबा–मोन पड़लैन। तरखने देखलैन जे तीमन-तरकारीक मोटरी माथपर नेने दच्छिनसँ अबैए। रमचेलबाकेँ देखिते बाबाक मन सहैम गेलैन जे सभ दिन पोताकेँ संग नेने जाइ छेलौं, आ... । लगले मनमे एलैन जे 'जे पूत हरवाहि करए गेल देव-पितर सभसँ गेल... ।' तैबीच हाथमे लोटा देखि रमचेलबा लग आबि पुछि देलकैन-

"केतए गेल छेलह बाबा हौ?"

बाबा आवाक भऽ गेला ।मनमे उठलैन- आब तँ यएह सभ ने करत, तँए अनुकूल बना राखब जरूरी अछि। निधोख होइत बाबा बजला-

"बौआ, तूँ हाटपर गेलह आ एमहर बिझो भऽ गेलै तँ की करितौं?"

जहिना निधोख बाबा बजला तहिना रमचेलबा पुछलकैन-

"बनलह किने?"

बाबाकेँ मोन पड़ि गेलैन पूर्वांचलक मणिपुरी भोज; जइमे जे वस्तु जेते नीक रहै छै ओ ओते पहिने परोसि खुऔल जाइए। मुदा अपना ऐठाम तँ अन्नकेँ अन्न बुझनिहार आगूमे आएल पहिल अन्नक पूजा करत... । बाबा बजला-

"बौआ, नीक भेलौ जे तों नइ गेलेँ ।"

अपन बात सुनि रमचेलबा पुछलकैन- "से की हौ?"

अनुकूल होइत रमचेलबाकेँ देखि बाबा कहलखिन-

“धुर! हूसा गेल।”

अकचकाइत रमचेलबा पुछि देलकैन-

“से की हौ?”

“की कहबौ, भात-दालि बड़ पवित्र बनल छेलै, तैपर अल्लू-परोरक तरकारी तेहेन बनल छेलै जे देखिए कऽ मन हलैस गेल। खूब खेलौं। तेकर पछाइत जे नीक-नीक विन्यास सभ आबए लगलै, ओकरा दिस केना तकितौं!”

“तब तँ खूब बनलह?”

“अपूछ भऽ गेल!”

❑

शब्द संख्या: 204

पोखला कटहर

पान साए रुपैआ खरच भेला पछाइत झबरी काकीकेँ अदहा छूटपर एक हजार रुपैआ बैंकसँ लोन भेटलैन। अखन धरिक जिनगी बोइन-बुत्ताक रहलैन तँए ओहन रोजगार चाहैत रहैथ जे करि सकैथ। ओना, झबरी काकीक घरे लग रोजगरनी सभ छैन मुदा जातिक विभाजन काजोकेँ कम सक्कत विभाजित नै केने अछि। तँए लगमे रहितो झबरी काकी अनाड़ीक-अनाड़ीए छैथ। मुदा पुछबो केकरा करथिन। एक हजार रुपैआक बात अछि। के केना झपैट लेतैन तेकर ठीक नहि...। काकीक घरक आगूए-क रस्ता-देने श्याम जाइत रहथिन। श्यामकेँ देखिते काकी टोकि देलखिन- "बौआ सियाम, तोहीं सभ ने बेटा-भातीज भेलह। रोजगार करैले एक हजार रुपैआ लोन देलक हेन।"

झबरी काकीक बात सुनि श्याम नजैर खिड़ौलैन। बगलेमे देखि कहलखिन- "पचहीवालीकेँ सोर पाड़ियौ।"

पचहीवालीकेँ अबिते श्याम पुछलखिन- "भौजी, अहाँ अपना संगे तरकारी बेचैक लूरि सिखा दियौ। अपनो किछु पूजी भइये गेलैन। ऐ बेर तेते आम फड़ल अछि जे कटहरकेँ के पुछत। ओना, बेसी फड़ने पोखलाहे कटहर बेसी अछि, मुदा चौथाइ कमाइ लऽ कऽ बेच लिअ।"

❑

शब्द संख्या: 154

सरही सौबजा

दिन भरि सात गोरेक संग झंझारपुरिया वेपारी आम तोड़ि काँच-पाकल आ फुटल बेरा, टौकड़ी बना, ट्रकक प्रतिक्षामे टहलैत गामक चाहक दोकानपर आबि अनेरे बजैत-

"एहेन ठकान जिनगीमे नइ ठकाएल छेलौं, जेहेन आइ ठकेलौं!"

चाहे दोकानक छर्ड़ा बुझि आनो-आन छर्ड़ा छोड़लक-

"झंझरपुरिया तँ इलाकाकेँ ठकैए आ ओकरा ठकि लेत हमर गौंआँ?"

वेपारियोकेँ मनमे किछु रहै तँए पाछू हटैले तैयार नहि। बत-कटौवैल एहेन चलि गेल जे ने एकोटा ऐ गामक नीक अछि आ ने झंझरपुरिया। बोलीक मारि तँ धुड़-झाड़ होइत, मुदा आगू बढ़ैक साहस कियो ने करए। एकटा गामक प्रतिष्ठा बुझि तँ दोसर घोड़नक कटान बुझि।

ओना, चौकक रोहानी ठीक छेलै किएक तँ सूर्यास्तक समय छल। चौकक रोहानी देखिते जटा भाय चाहे दोकानपर बैसला। सामाजिक प्रश्न, तँए हस्तक्षेप कएल जा सकैए। जटा भाय पुछलखिन-

"कथीक घोंघौज छी?"

झंझारपुरबला वेपारी कहलकैन-

"अहीं गाममे लखनजी सँ पाँच हजारमे सौबजा आमक एकटा गाछ नेने छेलौं तइमे ठकि लेलैन।"

अपन चर्च सुनि लखनजी सेहो मोबाइलक दोकानपर सँ चाहक दोकानक आगूमे आबि ठाढ़ भेला। वेपारीक प्रश्न उठिते लखनजी पुछलखिन-

“की ठकि लेलौं, बाजू।”

वेपारी कहलकैन-

“कलमी बुझि नेने छेलौं, सरही दऽ ठकि लेलौं!”

तैपर लखनजी पुछलखिन-

“केतेमे नेने छेलौं आ आम केतेक भेल?”

“से तँ नफगर अछि, पाँच हजारमे नेने छेलौं। खर्च-बर्च काटि कहुना पाँच हजार बँचबे करत?”

जटा भाय पुछलखिन-

“तखन जे एना बजै छी से उचित भेल?”

वेपारी कहलकैन-

“हमर बात दोसर अछि। सौबजा कलमी होइ छइ। हिनकर अँठियाहा छिऐन, माने सरही छिऐन। ओना, साइजोमे ठीक छैन।”

जटा भाय-

“अहाँ केना बुझै छी जे मुँह-नाक एक रहितो सरही छी?”

वेपारी कहलकैन-

“चचाजी, अहूँ भासि जाइ छी। कहुना भेलौं तँ वेपारी भेलौं किने। कुमारि-बियौहतीक भाँज जँ नै बुझबै तँ घटकैती कएल हएत?”

❑

शब्द संख्या: 269

तेरहो करम

अबेर कऽ भाँज लगने कनटीर काका खेत देखए नइ गेला। ओना, मनमे उठलैन, मुदा भदवारि जानि नै गेला। विचारि लेलैन जे इजोरिया छीहे भोरगरे देखि लेब।

छगाएल मन साढ़े तीनिए बजे नीन टुटि गेलैन। नीन टुटिते नजैर दौग कऽ काज पकैड़ लेलकैन। तीन-हथ्थी ठेंगा लऽ कनटीर काका बाध दिस विदा भेला।

श्रीविधि खेती-ले जे धानक बीआ भेटल छेलैन वएह धान। रौदीक किरतबे विधि तँ भंग भऽ गेलैन मुदा साए रुपैए घन्टा पटा बीघा भरि खेती केलैन। संयोगो नीक बैसलैन। कोसी नहैरक पहिल पानि हाथ लगने सुतरलैन।

नबे दिनक पाकल धानमे भरि जाँघ पानि, चुट्टी-पीपड़ीसँ लदल सीस देखि कनटीर कक्काक मन चोटसँ चोटाए लगलैन। असहाज होइते बमछैत घर दिस घुमि गेला। मोहनलालक घर लग अबिते आरो बमैक-बमैक बमछी छुटए लगलैन। आँखि मीड़िते मोहनलाल आँगनसँ निकैल कनटीर कक्काक लगमे आबि पुछलकैन- "काका, एना किए भोरे-भोर बमकै छिऐ?"

ओना, कनटीर काका आ मोहनलालक उमेरक दूरी बीस बर्खसँ बेसी हटल, मुदा विचारक दूरी लगीच बनौने तँए दुनूक बात दुनू सुनबो करै छैथ, सुनेबो करै छैथ आ मानबो तँ करिते छैथ।

‘बमकी’ सुनि कनटीर काका ठमकैत बजला-

“की कहियह बौआ, परसू धान काटि तोर बागु करैक विचार केने छेलौं। तोहूँ तँ खेती करिते छह, तोहीं कहह जे धानक-नारक की गति हएत, छनुआँमे केते भीड़ होइ छै से कि कोनो नै बुझै छहक। तैपर कहिया खेतक पानि सुखत आकि फेर दोहरा कऽ पानि औत तेकर कोन ठेकान छइ?”

कनटीर कक्काक दहलाइत छातीकेँ खढ़ फेक असथिर करैक विचार मनमे उठिते मोहनलाल कहलकैन-

“डुमैक कोन आशा करै छी काका, उगैक आस करू।”

मोहनलालक तोष कनटीर काकाकेँ जेते संतोष देलकैन तइसँ बेसी असंतोष बनौलकैन। मनमे एलैन जे एक तँ ठेकाइन कऽ नहरक पानि नै अबैए तैपर सँ छहरक बान्ह-छेक सेहो नियमित नै अछि आ तैपर सरकार कहत जे कानून अपना हाथमे नै लिअ! बजला-

“एको कर्म बाँकी नै रहत। तेरहो कर्म भइये जाएत। सबहक नजैर दैछने खाइपर लटकल छै से केना उतरतै?”

मोहनलाल-

“काका, ‘जे कुदै-फानै तोड़ै तान से राखए दुनियाँक मान’ बिसैर गेलऐ?”

किछु मोन पाड़ैत कनटीर काका बजला-

“हौ, छोड़ियो केना देब, अकाल मृत्यु केना हुअए देब!”

❑

शब्द संख्या: 322

डुमैत जिनगी

डुमैत कारोबार देखि झड़ीलाल डुमैत जिनगी जहिना ओछाइनपर पड़ल चारक कोरो-बत्ती लोक देखैत तहिना देखि रहल छैथ। तड़पैत मन बेथित भऽ दुनियाँ निहारिते बुदबुदेलैन-

“एतेटा दुनियाँमे अपन किछु ने रहल!”

मुदा लगले मन ठमैक गेलैन। जिनगी तँ परती खेत जकाँ नै अछि जे जेतइसँ तेमहर जेबाक हुअए तेतइसँ तेमहर कोणा-कोणी रस्ता बना लिअ! जिनगीक तँ नाप अछि।

ओना, पचास बर्खक झड़ीलाल अखन धरि हारि मानैले तैयार नइ छला मुदा एकाएक मृत्युक समीप देखि थर-थरा गेला। हारि नै मानैक कारण छेलैन जे जे गौरव गाममे केकरो नै देखै छला ओ अपनामे देखै छला। ओ छिऐन समैया फसिल जकाँ भिन्न-भिन्न नाओं। अनेको नाओंसँ अपन प्रतिष्ठा बनौने छैथ। कियो ‘वेपारी भाय’, तँ कियो ‘डॉक्टर भाय’, कियो ‘दिलीप भाय’ कहै छैन। मुदा स्त्रीगणक बीच ‘झड़-झड़हा’ नाओं चलै छैन! यएह छिऐन झड़ीलालक जिनगीक मान-प्रतिष्ठा...। मुदा जे हौउ, झड़ीलाल अपनाकेँ मेहनती वेपारी जरूर बुझै छैथ।

सालमे तीन-चारि जोड़ टुटल बरद सस्तामे आनि, दुनू परानी जमि कऽ सेवा करै छैथ आ डेढ़िया-दोबरमे बेच अपना जीविकाक अधार बनौने छैथ। घुमै-फिरैबला छैथे तँए तीनू बेटीक बिआह तेहेन नजरिये केने छला जे कहियो भार नै बुझलैन।

अन्तिम खेप माने ऐ खेपमे ठका गेला। आठे दिन खुट्टापर बरद अनला भेलैन कि पाँचे दिनक बीच जोड़ो भरि बरद मरि गेलैन।

खुट्टापर पड़ल मुइल बरद लग बैसल दुनू परानी झड़ीलालक अक-वक बन्न। तरसैत मन कलपैत देवसुन्नैरक, जहिना रौद-पानि वा शीतमे सिताएल चिड़ै पाँखि फुरफुरबैए, तहिना मन फुरफुरेलैन-

"भगवान हाथक काज छीन लेलैन!"

पत्नीक बातक उत्तर झड़ीलालकेँ नै फुरलैन। फुरबो केना करितैन, जिनगीमे कहियो पहरनियाँ देवीक पूजा पहाड़पर चढ़ि नै केने छला। मुदा तैयो घिंघियाइत स्पष्ट उत्तर देलखिन-

"दुनियाँ बड़ीटा छै! एकटा काज छिनाएल तँ दोसर-तेसर-चारिम ताकि लेब।"

पतिक उत्तरसँ देवसुन्नैरकेँ झँपन-तोपन बरसाती सुरूज जकाँ आशाक किरिण फुटलैन, मुदा लगले फेर तोपा गेलैन...। बजली-

"काज-ले तँ लूरि चाही, से..?"

❑

शब्द संख्या: 286

चोर-सिपाही

चोरिक बाढ़ि एने गामे-गाम चोरक सोहरी लगि गेल। जहिना घोरन लुधकैत तहिना चोरो लुधकए लगल। सेहो एकरंगा नहि, सतरंगा! पाँखिसँ बिनु पाँखिबला घोरने जकाँ घुरछा-घुरछे! जेकर बहुमत तेकर राज-पाट! शासक-सँ-सिपाही धरि...। अगहन मास। गामक अदहासँ ऊपर उपजल धानक खेतमे 144 लगि गेल। कोनो बटेदारीक चलैत तँ कोनो फटेदारीक। सरकारियो काज तँ सरकारीए छी। एक घन्टाक काज मासो दिनमे हएत तेकर कोनो गारंटी नहि। तखन 144 मे जप्त भेल खेत 44 दिनक बदला 44 मासो रहि सकैए। खाएर.., ओस पला गेल। दिन खिआ कऽ पानि भऽ गेल। दिन-राति शीतलहरीमे डुमि गेल। दर्जनो भरि सिपाही धानक ओगरबाहि करैत अपना जिनगी दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे जान बँचब कठिन अछि। पहिल सिपाही बाजल-

“खस्सी मासु खाइ-जोकर समय अछि।”

दोसर सिपाही बाजल-

“जँ बनबैले तैयार होइ तँ खस्सी आनि देब।”

सएह भेल। दूटा सिपाही विदा भेल। जेना हाथमे हथियारो आ देहमे वर्दियो रहबे करइ तहिना दिनके देखल खस्सियो आ घरो छेलैहे। अपने जकाँ एक गोरे मुँह दबलक आ दोसर उठा कऽ लऽ अनलक।

बना-सोना कऽ सभ भरि मन खेलक। मुदा दोसरे दिनसँ दुनू

सिपाहीकेँ आन-आन सिपाही 'चोरबा' कहए लगल।

सालो नइ लगलै, ग्लानिसँ ओ दुनू सिपाही गड़ि दुनू नोकरी छोड़ि अपन पुरना वृतिमे लगि गेल। एक समाज 'चोर-सिपाही' तँ दोसर समाज 'सिपाही-चोर' कहए लगलै।

❑

शब्द संरव्या: 202

दूधबला

फगुआक समय। पीह-पाहसँ मौसमक रंग चढ़ि रहल छल। दिनुका काज उसारि नित्यानन्द काका दरबज्जापर बैस सालक फगुआक नीक-बेजापर ऊपर-निच्चाँ विचारि रहल छला। जाड़सँ गरमीक प्रवेश भऽ रहल अछि। ठाढ पानिकेँ इनहोराइ-ले ठंढ मारि तँ सिरसिसाइए पड़तै। जँ से नइ तँ इनहोराएत केना? मुदा तेहेन दोखाह दोरस हवा बहि गेल जे सोझ बाट माने नीक रस्ता बाउल-गरदासँ अन्हरा कऽ तेहेन बहबाँरि बनि रहल अछि जे भरि मुँह बाजब कठिन भेल जा रहल अछि।

सूर्यास्त तँ भऽ गेल मुदा अन्हराएल नै छेलइ। मोटर साइकिलसँ उतैर मनोहर नित्यानन्द काकाकेँ प्रणाम करैत आगूक चौकीपर बैसल।

किछु दिन पूर्व धरि नित्यानन्द काका मनोहरकेँ दूधबेच्चा बुझै छला, मुदा पनरह-बीस दिन पहिने शंका जगलैन से जगले रहि गेलैन। जइसँ विचार बदलए लगल छेलैन। मुदा कोनो विचारकेँ बदलैसँ पहिने ऊपर-निच्चाँ देखि लेब जरूरी बुझि पुछलखिन-

“कारोबारक की हाल छह?”

नित्यानन्द कक्काक उत्तर दइसँ पहिने मनोहरक मनमे आएल जे जखन फगुआक सनेस अनने छिऐन तखन आगूमे रखैमे कोन लाज। अनेरे ‘साँइक नाओं सभ जानए आ हए-हए करए!’ जुगोक तँ धर्म होइ छइ। के भँगखौका शराब नै पीबैए। ओ सभ तँ निशोकेँ पानि उताइर देने अछि। भाय जखन एकटा प्रेमी अछि तखन तँ जिनगी भरि प्रेम करू नइ

तँ पुरुखक आँखिसँ गिरब ओते महत नै रखै छै जेते मौगीक आँखिसँ।

..मुदा अपनाकेँ सम्हारि विचारि लेब जरूरी बुझि बाजल-

“काका, आइक जुगमे दूध बेचने गुजर चलत, तखन तँ..?”

मनोहरक बात नित्यानन्द काकाकेँ ठहकलैन। मुदा तेयौ मन नै मानलकैन बजला-

“केते गोरे गाममे दूधबेच्चा छह?”

गर पाबि मनोहर बाजल-

“काका, आब कि कोनो गाइए-महींसिक दूध बिकाइए! आब तँ गाछसँ लऽ कऽ लोहा धरिक दूध बिकाइए। केतेक नाओं कहब। जेम्हरे देखै छी, तेम्हरे सएह।”

‘सएह’क सह पाबि नित्यानन्द काका हूँहकारी भरलैन-

“से सएह।”

❑

शब्द संख्या: 275

टाइपिस्ट

पच्चीस बर्ख पूर्व मैट्रिक सेकेण्ड डिवीजनसँ पास केलौं। ने नोकरी भेल आ ने लोकक पीहकारी दुआरे खेती केलौं। शत-प्रतिशत अपनाकेँ भारत सरकारक बेरोजगारक बोहीमे नाओं लिखा लेलौं।

भरि दिन गप-लड़ौनाइसँ लऽ कऽ ताश जोतै धरिक रूटिंग बना लेलौं। किछु दिनक पछाइत बुझि पड़ल जे भरिसक हमरा सबहक फाइल लाल-फीताक तरमे पड़ि गेल। ओना, पाँच बर्ख रेगुलर बेरोजगार रहलौं, मुदा एक दिन तामस उठल नवीकरण करौनाइ छोड़ि देलौं। तेकर पछाइत कोन बेरोजगार भेलौं तेकर अर्थ नहियेँ तहिया लागल आ ने आइए बुझै छी। जेकर खरच लाख रुपैआ, उपजे सबा सेर..!

दइबला भगवान छैथ लगौता कोनो फेर। सवुर तँ भेल मुदा मन नै मानलक। तखन भेल जे किछु करक चाही। ओना, मन तँ छह-पाँच केलक, मुदा टाइप-राइटिंग मशीन वेसाहैक विचार भेल। वेसाहलौं। टाइपिस्ट बनि अपनाकेँ ठाढ़ देखलौं। ओना, बजारक भाउए ठीके छी।

आब कहू जे एहनो होइ जे जेते कागत-पत्तर टाइप करब से गणेशजी जकाँ बुझबो अनिवार्य अछि। आकि टाइप करैक पाइ लइ छिऐ, टाइप कऽ देबइ। जँ केतौ छुटो-छाट हेतै आकि शब्दो गलती हेतै, से दोख मशीनक हेतै आकि हमर हएत? कहू जे केहेन बुड़िपना सोहनक भेलै जे पुछलैन-

“कागतमे कि सभ छेलै?”

सोहन इंजीनियरिंग पढ़ि बंगलोरमे काजरत छैथ। बिआही पत्नी शिक्षिका छथिन। कनीए तरपट ई छैन जे एक गोरे बंगलोरमे छैथ दोसर गाममे। ओना, सोहनोक सोचब गलती नै भेलैन। कमेता बंगलोरमे रहता बंगलोरमे आ घरवाली रहथिन गामक घरमे से केहेन हएत। जिनगीक तँ स्तर होइ छइ।

शिक्षिका पत्नी थूक फेक अनठबैत एली जे अपने कि कोनो नै कमाइ छी जे एहेन छुतहरक कमाएल खाएब। मुदा संगी-तुरिया पीठपोहू भेलैन। दुनू बेकतीक भेद न्यायालय पहुँच गेल। ओही कागतक कच्चा नकलक बात सोहन पुछने छला।

❑

शब्द संख्या: 263

समदाही

अनुप काकाकेँ दूटा पत्नी छैन। गृहस्ती जीविका रहने तीनू परानी अपन-अपन काजमे दिन-राति मगन रहै छैथ। दुपहरिये रातिसँ मालक तकतियान अनुप काका करए लगै छैथ। सभ दिनक संग रहितो जहिना दिन-राति बारहो मास घुसैक-घुसैक अपन काज करैत रहैए तहिना तीनू परानीक बीच सेहो होइते छैन। मुदा जहिना लोकक धियान दिन-रातिपर नै पड़ै छै तहिना अनुपो कक्काक धियान नै पड़ै छैन। हमरा खेलासँ काज तँ हमरा पीलासँ काज, बस एतबे।

समय केकरा संग छोड़ै छै जे अनुप काकाकेँ छोड़तैन। जखने अधरतियामे उठता आकि मुँह-हाथ धोइते पहिने चाह पीता। जहिना केतौ चलैसँ पहिने माए अपन बच्चाकेँ खुअबैए तहिना अनुपो काकाकेँ दुनू सौतिन करिते छैन। ओना, नियमित काज दुनू सौतिनमे बाँटल नहियेँ छैन, नजैरेसँ बाँटि-बाँटि काज करै छैथ, तँए ने कहियो उपरौंज होइ छैन आ ने बैसारी बुझि पड़ै छैन।

दू बजे रातिमे चाह पियाएब, तोहूमे जाड़क मासमे, से अबूह तँ दुनू सौतिनकेँ लगबे करैन। केतबो पति-सुख लोककेँ भेटौ मुदा जाड़ोक तँ अपन सुख छइ। मुदा थर्मसमे चाह बना पति-सेवा दुनू कऽ लइ छैथ। काजो असान भऽ जाइ छैन। एतबे ने जे थर्मससँ गिलासमे ढारि दिअ पड़ै छैन। काजक बँटबारा नै रहने कहियो बिआही तँ कहियो समदाही पिअबैत रहै छैन। काज करैक ढंग दुनूकेँ अपन-अपन छैन। बिआही,

गिलास धो औन्ह कऽ रखै छैथ, जखन कि धोइ दुआरे समदाही गिलासेमे पानि रखि दइ छथिन।

चाहक सुआद पबिते अनुप काका बुझि जाइ छैथ जे केकर किरदानी छी, मुदा कहबो केकरा करथिन। कोनो आँगुर कटने अपने घाव! तहूमे सौतिनियाँ डाह, घरेसँ सरेरा उठत। तहूमे खेती-पथारी-ले नहि, खाइ-पीऐ-ले..! भरि दिन अनेरे मगजमारीमे ओझरा जाएब। तइसँ नीक चुपे रहब।

करसीक लहलहाइत घूर लग बैसते बिआही चाह नेने एलखिन। चुस्की लइते अनुप काकाकेँ बजा गेलैन-

“हँ, औझुका चाह चाह जकाँ लगैए!”

बजला तँ अनुप काका फुसफुसाइए कऽ, मुदा समदाही सुनि गेलखिन। सुनिते फरिक्कैसँ जुमा कऽ फेकली-

“बड़ काग भाषा सुनिनिहारि भेल छैथ।”

❑

शब्द संख्या: 295

बुढ़िया दादी

नहि जानि दादीकेँ एहेन क्रोध किए भऽ गेलैन। एक तँ औहुना बैशाख-जेठक सुखाएल जारैन चरचराइत रहैए, खढ़क छाड़ल-छार पटपटाइत रहैए, तइ हिसाबे दादियोक खटखटाएब अनुकूले भेल। दादी माने तीन पीढ़ी ऊपर नहि, गामक बनौआ दादी। नवो-नौतारि बनौआ दादी होइते छैथ, उचितो छइ।

आठ-दस बर्खक पोता अपन कुत्ताकेँ अनठियासँ लड़ा देलक जइसँ कोनचरक सजमैनक गाछ टुटि गेलैन, तेकरे तामस दादीकेँ पोतापर रहैन। जखन टुटलैन तखन बाधमे रहैथ तँए नै देखलखिन। तखन ततबे, कुत्तेक झगड़ा भरि। बारह बजे बाधसँ अबिते, जहिना हजारो चेहराक बीच प्रेमीक नजैर प्रेमिकापर जा अँटैक जाइत, तहिना दादीक नजैर सजमैनक गाछपर पहुँच गेलैन। लटुआएल-पटुआएल पड़ल देखलखिन। नरसिंह तेज भेलैन, मुदा परिवारक सभ गबदी मारि देलक। तँए अधडरेड़ेपर तामस अँटैक गेलैन। जँ अकासक पानिकेँ धरती नै रोकए तँ पताल जाइमे देरी लगतै? दोसर साँझ जखन बाधसँ घुमि कऽ दादी एली तँ नीक जकाँ भाँज लगि गेलैन जे पोताक किरदानीसँ गाछ नोकसान भेल। तामस लहरए लगलैन। छौड़ाकेँ सोर पाड़लखिन- "अगतिया छैँ रौ, रौ अगतिया?"

नाओं बदलल बुझि गोविन्दोकेँ अवसर भेटलै। अन्हारे गरे चौकी-दोगमे नुका रहल। अपने फुरने दादी भटभटाए लगली- "भरि दिन छौड़ा एमहर-सँ-ओमहर ढहनाइत रहैए आ कुत्ता-विलाइ तकने घुड़ैए!"

मुदा लगले मन ठमैक गेलैन। भरिसक अँगनामे नै अछि, खाइ-बेर

भेल जाइ छै, केतए छिछियाइ-ले गेल जे अखन धरि अँगनामे नै अछि। पुतोहुकेँ पुछलखिन- “कनियाँ, बौआ कहाँ अछि।”

बेटाकेँ अपन जान सुरक्षित बुझि पुतोहु कहलकैन- “बड़ी-काल सँ नै देखलिऐ।”

पोताकेँ तकैले बुढ़िया दादी विदा भेली।

सुतै बेर गोविन्दा अलिसाएल आबि दादीकेँ कहलक- “दादी बिछान बीछा दे।”

गोविन्दक बात सुनि दादी पिघैल गेली। ओछाइन ओछा कऽ सुता देलखिन। सेन्धपर पकड़ल चोर जकाँ, तामस फेर करुआ गेलैन। मुदा निनियाँ देवीक कोरामे गोविन्दाकेँ देखि क्रोध घोंटए लगली। मनमे उठलैन- अखन छोड़ि दइ छिऐ, भोरहरबामे पेशाब करैले उठेबे करत, बुझतै केहेन होइ छै सजमैनक गाछ तोड़नाइ। जाबे सभ करम नै कराएब ताबे चालि नै छुटतै।

भोरहरबामे गोविन्द दादीकेँ उठबैत बाजल- “दादी-दादी।”

दादी गबदी मारैक विचार केलैन। मुदा तीन बेरक पछाइत तँ गरियेबे करत, तइसँ नीक जे तेसर हाकमे अपने बाजि दिऐ। की हेतै, एकटा सजमनियेँक गाछ ने टुटल। फेर रोपि लेब।

❑

शब्द संख्या: 332

❑❑❑

❑❑

❑